Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ اِذۡ ھَدَیۡتَنَا
وَھَبۡ لَنَا مِنۡ لَّدُنۡکَ رَحۡمَۃً
اِنَّکَ اَنۡتَ الۡوَھَّابُ

(सूरत आले इम्रान :9)

अनुवाद: हे हमारे रब्ब, हमारे दिल को टेड़ा न होने दे इस के बाद कि तू हमें हिदायत दे चुका है और हमें अपनी तरफ से रहमत प्रदान कर निसन्देह तू ही है जो बहुत प्रदान करने वाला है।

वर्ष 4

अंक 1-2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

26 रबीउस्सानी 3 जमादिल अव्वल 1440 हिजरी कमरी 3-10 सुलह 1397 हिजरी शमसी 3-10 जनवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

यही सत्य है कि मसीह की मृत्यु हो चुकी है और मोहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में उसकी क़ब्र है। याद रखो कि अब ईसा आकाश से कदापि नहीं उतरेगा, क्योंकि जो इक़रार उसने आयत- فَلَمَّا تَوَفَّیۡتَنِیۡ "फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी" (अलमाइदह-118)के अनुसार प्रलय के दिन करना है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रत्येक मूर्ख और अत्याचारी स्वभाव वाला मनुष्य जब प्रमाण प्रस्तुत करने से असमर्थ रहता है तो फिर तलवार या बंदूक की ओर हाथ बढ़ाता है। परन्तु ऐसा धर्म ख़ुदा की ओर से कदापि-कदापि नहीं हो सकता जो केवल तलवार द्वारा फैल सकता है न कि किसी अन्य उपाय से। यदि तुम ऐसे जिहाद को नहीं त्याग सकते और उस पर क्रोधित होकर सच्चों का नाम भी दज्जाल और अधर्मी रखते हो तो हम इन दो वाक्यों पर इस भाषण को समाप्त करते हैं-

قُلۡ یٰۤاَیُّہَا الۡکٰفِرُوۡنَ۔ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ

"कुल या अय्योहल काफ़िरूना ला आबुदो मा तअबुदून"

(अलकाफ़िरून-2,3)

आन्तरिक फूट और कलह के समय तुम्हारा काल्पनिक मसीह और काल्पनिक महदी किस-किस पर तलवार चलाएगा। क्या सुन्नियों के समीप शिया इस योग्य नहीं कि उन पर तलवार उठाई जाए और शियों के समीप सुन्नी इस योग्य नहीं कि उन सब को तलवार से मिटा दिया जाए। अत: अब तुम्हारे आन्तरिक फ़िर्के ही तुम्हारी आस्थानुसार दण्डनीय हैं तो तुम किस-किस से जिहाद करोगे। पर स्मरण रखो कि ख़ुदा को तलवार की आवश्यकता नहीं। वह धरती पर अपने धर्म का प्रसार आसमानी निशानों के साथ करेगा और उसे कोई रोक नहीं सकेगा। याद रखो कि अब **ईसा आकाश से कदापि नहीं उतरेगा,** क्योंकि जो इक़रार उसने आयत-

فَلَمَّا تَوَفَّیۡتَنِیۡ

"फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी" (अलमाइदह-118)

के अनुसार प्रलय के दिन करना है। इसमें स्पष्ट रूप से उसने स्वीकार किया है कि वह दोबारा संसार में नहीं आएगा और प्रलय के दिन उसका यही बहाना है कि ईसाइयों के बिगड़ने की मुझे ख़बर नहीं और यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में आता तो क्या वह यही उत्तर देता कि मुझे ईसाइयों के बिगड़ने की कुछ ख़बर नहीं। अत: इस आयत में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि मैं दोबारा संसार में नहीं गया और यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में आने वाला था और निरंतर चालीस वर्ष तक। तब तो उसने ख़ुदा के समक्ष झूठ बोला कि मुझे ईसाइयों की दशा की कोई ख़बर नहीं। उसको तो कहना चाहिए था कि मेरे **दोबारा आगमन** के समय मैंने संसार में लगभग चालीस करोड़ ईसाई पाए और उन सबको देखा और मुझे उनके बिगड़ने का पूर्ण ज्ञान है। मैं तो पुरस्कार योग्य हूं कि समस्त ईसाइयों को मुसलमान बनाया और सलीबों को तोड़ा। यह कैसा झूठ है कि ईसा कहेगा कि मुझे ख़बर नहीं। अत: इस आयत में ईसा मसीह ने साफ़ तौर पर इकरार किया है कि वह दोबारा संसार में नहीं आएगा। यही सत्य है कि मसीह की मृत्यु हो चुकी है और मोहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में उसकी क़ब्र है **अब** परमेश्वर स्वयं आकर उन लोगों से युद्ध करेगा जो सत्य से युद्ध करते हैं ख़ुदा का लड़ना आपत्तिजनक नहीं, क्योंकि वह निशानों के रूप में है। परन्तु मनुष्य का लड़ना आपत्तिजनक है क्योंकि वह दबाव स्वरूप है।

अलग हाशिया

एक यहूदी ने भी इसका सत्यापन किया है कि श्रीनगर में उपस्थित क़ब्र यहूदियों के नबियों की क़ब्रों के सामान बनी हुई है। देखो परचा

कैरियर डीलासिरा:- दक्षिणी इटली के सब से मशहूर अख़बार ने निम्नलिखित आश्चर्यजनक सूचना प्रकाशित की है:-

13 जुलाई 1879 को यरोशलम में एक बुद्ध सन्यासी कोरमरा नामी जो अपने जीवन में एक ऋषि विख्यात था। उसके पीछे उसकी कुछ संपत्ति रही। गवर्नर ने उसके संबंधियों की खोज करके उनको दो लाख फ्रेंक (एक लाख पौने उन्नीस हज़ार रुपए) दिए जो विभिन्न देशों के सिक्कों में थे, जो उस गुफ़ा में से मिले जिसमें वह सन्यासी एक दीर्घ समय से निवास करता था। रुपयों के साथ कुछ दस्तावेज़ भी उन संबंधियों को मिले जिन्हें वे पढ़ न सकते थे। कुछ इबरानी भाषा के विद्वानों को उन कागज़ात को देखने का अवसर प्राप्त हुआ तो उनको यह आश्चर्यजनक बात ज्ञात हुई कि ये कागज़ात बहुत ही प्राचीन इबरानी भाषा में थे। जब उनका अध्ययन किया गया तो उनमें यह अभिलेख पाया गया:-

"पतरस मछुआरा यसू मरयम के बेटे का सेवक इस प्रकार लोगों को ख़ुदा के नाम में और उसकी इच्छानुसार भाषण देता है" और यह अभिलेख इस प्रकार समाप्त होता है:-

"मैं पतरस मछुआरे ने यसू के नाम में और अपनी आयु के नब्बे वर्ष में ये प्रेम के शब्द अपने स्वामी यसू मसीह मरयम के बेटे की मौत के तीन ईद फ़सह पश्चात (अर्थात् तीन वर्ष पश्चात) ख़ुदा के पवित्र घर के निकट बुलीर के स्थान पर लिखने का निश्चय किया है"।

इन विद्वानों ने यह परिणाम निकाला है कि यह लेख पतरस के समय का चला आता है। लन्दन बाइबल सोसाइटी की भी यही राय है और उनका भली-भांति विश्लेषण कराने के पश्चात यह सोसायटी अब उनके बदले चार लाख लीरा (दो लाख साढ़े सैंतीस हज़ार रुपए) शेष हाशिया-मालिकों को देकर वे अभिलेख लेना चाहती है। यसू इब्ने मरयम की प्रार्थना उन दोनों को ख़ुदा सुरक्षित रखे उसने कहा:-

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-3)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होना कारकुनों को निरीक्षण।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

दिनांक 6 सितम्बर 2018 (प्रतिदिन गुरुवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर चालीस मिनट पर तशरीफ लाकर नमाज़ फज्र अदा की। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ्तर की डाक और रिपोर्टें देखीं और निर्देश दिए। हुज़ूर अनवर विभिन्न दफतर के मामलों में व्यस्त थे। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे।

कार्यक्रम के मुताबिक, जलसा गाह कैल्सरोए के लिए रवानगी थी। सवा पांच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास से बाहर आए और दुआ करवाई और यहाँ से कैलसरोए लिए प्रस्थान किया। बैयतुस्सबूह फ्रंटक्वैक से शहर की दूरी 160 किलोमीटर है। वह स्थान जहां जलसा का आयोजन किया जाता है, उसे K.MESSS कहा जाता है। इसका कुल क्षेत्रफल 150,000 वर्ग मीटर है और इसका कवर क्षेत्र 70 हज़ार वर्ग मीटर है। इसमें चार प्रमुख हॉल हैं और यह चार-हॉल वातानुकूलित है। प्रत्येक हॉल का क्षेत्रफल 1250 वर्ग मीटर है और हर हाल में कुर्सियों पर बारह हज़ार लोग बैठ सकते हैं और हर हाल में 18000 से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इन चार हॉल से जुड़े 128 बाथरूम हैं, और कई छोटे छेद हैं। पार्किंग स्थल में दस हज़ार कारें हैं।

दो घंटे की सफर के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सात बज कर पंद्रह मिनट पर जलसा गाह तशरीफ़ आवरी हुई। जलसा गाह पहुंचने से पहले पुलिस की गाड़ी ने कफिला को स्काट किया। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर आए तो अमीर साहिब जर्मनी, अफसर जलसा सालाना मुहम्मद इलियास मजूक: साहिब अफसर जलसा गाह हाफिज़ मुजफ्फर इमरान साहिब, अफसर खिदमते ख़लक हसनात अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर, थोड़ी देर के लिए अपने आवासीय क्षेत्र पधारे।

मुआइना कारकूनान (निरीक्षण व्यवस्था)

7:बज कर 35 मिनट पर जलसा सालाना का निरीक्षण शुरू हुआ। नायब अफसर जलसा सालाना एक पंक्ति में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मुहब्बत करते हुए इन के पास से गुज़रते हुए अपना हाथ ऊंचा कर के अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहा। सब से पहले हुज़ूर अनवर ने स्कैनिंग सिस्टम का निरीक्षण किया। इस के बाद एम.टी.ए इंटरनेशनल प्रोग्रामिंग और संपादन और आयोजकों से कुछ मुद्दों के बारे में बात की और उन के कुछ बातों के बारे में पूछा। उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मेन हॉल से बाहर लगी हुई मार्की में स्थापित ट्रांसलेशन विभाग में पधारे जहां विभिन्न भाषाओं में जलसा सालाना के सभी कार्यक्रमों और भाषणों का लाइव अनुवाद का इन्तिज़ाम किया गया था। यहां अनुवाद के लिए 18 कैबिन बनाए गए थे। बारह से तेरह भाषाओं में, जलसा सालाना के सभी कार्यक्रमों का अनुवाद का प्रबंध किया गया था । इसके अलावा, जलसा गाह औरतों के विशेष सत्र के लिए पांच से अधिक भाषाओं में अनुवाद का प्रबन्ध किया गया था । इस प्रकार, यहां अनुवादित 18 भाषाओं का कुल प्रबंधन था।

उस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ उस स्टोर के पास तशरीफ़ ले गए जहां खाने-पीने और प्रयोग की विभिन्न वस्तुओं स्टोर गई थीं। यहां से, इन आवश्यकता अनुसार विभिन्न विभागों को दी जाती हैं। उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने लंगर ख़ाना का निरीक्षण किया। इससे पहले, हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल ने मांस की कटाई की समीक्षा की। मांस की कटाई मशीनों के द्वारा की जाती है। हुज़ूर अनवर के निर्देश पर काम करने वालों ने मांस काट कर दिखाया। इस मांस को एक निर्धारित तापमान पर सुरक्षित करने के लिए एक कंटेनर के आकार का फ्रीजर प्राप्त किया गया है जिस में टनों के हिसाब से मांस रखा जा सकता है।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लंगर ख़ाना का निरीक्षण फरमाया और खाने पकाने की व्यवस्था का जायज़ा लिया और भोजन की गुणवत्ता देखी। चावल के अलावा, आलू गोश्त का सालन पकाया और दाल पकी हुई थी और साथ वह नान भी दिए रखे हुए थे जो मेहमानों को दिए जाने थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफकत करते हुए आलू गोश्त तथा दाल के कुछ लुक्मे ले कर खाना खाया। और इस बात की समीक्षा की कि क्या खाना सही पके हुए हैं या नहीं। हुज़ूर अनवर ने आयोजकों से खाने की गुणवत्ता के बारे में बात की।

अलग-अलग देशों के मेहमानों के लिए उनकी ज़रूरत और मिज़ाज के अनुसार अलग भोजन तैयार किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने रहम करते हुए इस की भी समीक्षा की।

लंगर खाने के काम करने वालों ने एक बड़े आकार का केक तैयार किया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन ख़ुद्दाम के लिए केक के विभिन्न टुकड़े किए और एक टुकड़ा खाया इस के बाद लंगर खाना के काम करने वालों ने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर भी खिंचवाई।

लंगर खाना के बाहर "देग वॉशिंग मशीन" लगाई गई थी। यह मशीन पिछले 10 ग्यारह वर्षों से लगाई जा रही है और यह समय समय पर इस में बेहतरी की जा रही है। इस मशीन को अहमदी इंजीनियर्स ने ख़ुद मिल कर तैय्यार किया है। शुरुआत में यह अवस्था थी कि मशीन पर देग रखने के बाद एक बटन दबाया जाता था। लेकिन पिछले साल से इस में यह सुधार लाया गया है कि अब यह बटन दबाया नहीं जाता बल्कि जैसे ही देग धोने के लिए रखी जाती है अपने आप मशीन चलना शुरू हो जाती है। एक सेंसर सिस्टम स्थापित किया गया है, जो स्वचालित रूप से कार्य करना शुरू कर देता है, और देग धुलने का काम पूरा होने के बाद यह स्वचालित रूप से बाहर आ जाती है।

हुज़ूर अनवर ने निरीक्षण के दौरान, पाया कि क्या इस मशीन में अन्य किसी चीज़ की वृद्धि की गई है। जिस पर इन्चार्ज ने बताया कि इस में कोई वृद्धि नहीं हुई है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ निजी तम्बूओं के परिसर में पधारे और तम्बूओं के बीच के मार्ग से गुज़रे। रास्ता के दोनों तरफ, जर्मनी के विभिन्न हिस्सों और क्षेत्रों के परिवार अपने तंबूओं के पास खड़े थे। सभी अपने हाथ ऊंचे कर के हुज़ूर अनवर सेवा में सलाम अर्ज़ करते।

हुज़ूर अनवर ने रहम प्यार से अपना हाथ बढ़ा कर उनके अभिवादन का जवाब दिया और कुछ से हुज़ूर अनवर ने उनके टेंटों के हवाले से बात भी की। दोनों तरफ से दोस्तों लगातार नारे लगा रहे थे।

निजी तम्बूओं के एक तरफ तरफ एक हिस्सा निजी **शेष पृष्ठ 16 पर**

ख़ुत्बः जुमअः

समय के ख़लीफा के दौरों के तीन लाभ होते हैं। (1) देश के पढ़े लिखे तथा प्रभाव रखने वाले लोगों से सम्पर्क .2 मीडिया के माध्यम से इस्लाम अहमदियत का परिचय और वास्तविक शिक्षा का प्रचार। 3 जमाअत के लोगों से व्यक्तिगत सम्पर्क और इसके नतीजे में उन के ईमान तथा इख़लास तथा समय के ख़लीफा के साथ प्रेम तथा भाईचारा में वृद्धि।

इस्लाम ही दुनिया की समस्याओं का हल है अमन तथा सलामती स्थापित करने का माध्यम भी इस्लाम ही है। सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं के समाधान की तरफ भी इस्लाम से मार्गदर्शन मिलता है।

यह हमारा काम है कि हम इस्लाम के वास्तविक सन्देश को अमरीका में भी और सारी दुनिया में मेहनत से सहीह तरीका से फैलाएं। अल्लाह तआला करे कि उन को यहां जहां आसानियां तथा सुविधाएं मिले वहां उन में यह इहसास हर समय रहे कि उन्होंने धर्म को दुनिया पर प्रभुत्व देना है। और दुनिया की चकाचौंध में डूब नहीं जाना।

(पाकिस्तान से हिजरत कर के अमरीका में शर्णार्थी के रूप में आने वाले अहमदियों के लिए हुज़ूर अनवर की दुआ।)

यह एक अदभुत पैग़ाम है और आप की बात दिल को लगती है। आप केवल वर्तमान समय की बात नहीं कर रहे होते बल्कि आप की नज़र आने वाले समय पर होती है।

(दौरा के समय हुज़ूर अनवर से मुलाकात करने वाले कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाएं।)

अमरीका में इस सफर के दौरान अल्लाह तआला के फज़्ल से तीन मस्जिदें और ग्योटेमाला में नासिर हस्पताल, रिव्यू आफ रिलीजनस के स्पेनिश संख्या का आरम्भ,

दौरा गोएटेमाला की रीडियो टीवी, और अख़बारों तथा सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार, इस दौरा की बरकत से चार करोड़ लोगों तक इस्लाम अहमदियत का सन्देश पहुंचा।

अक्तूबर, नवम्बर 2018 ई को अमरीका तथा गोएटेमाला के बरकतों वाले तथा सफल दौरा का वर्णन।

ख़िलाफत के सच्चे आशिक और श्रद्धालु आदरणीय सावादो इस्माईल साहिब आफ बोरकीना फासो को ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 नवम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले जुम्अः को तहरीक जदीद के नए साल के एलान के कारण मैंने अमरीका और गोएटे माला का जो पिछला सफर था उस के बारे में वर्णन नहीं किया। अल्लाह तआला के फज़ल से इस दौरे के बहुत सकारात्मक प्रभाव पैदा हुए हैं। अपनों तथा दूसरों से प्रभाव सम्बन्ध के कारण से भी और जमाअत के प्रबन्ध के कारण से भी सीधा सम्पर्क तथा देखने के कारण बहुत सी बातें मेरे ज्ञान में आ जाती हैं।

अल्लाह तआला के फज़ल से इस सफर में तीन मस्जिदों के उद्घाटन का अवसर मिला। अल्लाह तआला इन मस्जिदों को नमाज़ियों से हमेशा भरा रखे। और जमाअत के लोगों के इख़लास तथा वफा में तरक्की देता रहे। बच्चों नौजवान औरतों तथा मर्दों ने भी जहां भी मैं जाता रहा हूं पहले फिलोडलफिया में फिर होस्टन में फिर वाशिंगटन में अपने समय के अधिकतर समय मस्जिद में ही गुज़ारे हैं। बच्चों के माता पिता भी और दूसरे रिश्तेदार अब तक लिख रहे हैं कि आप के आने से बच्चों को यही ज़ोर होता था जल्दी मस्जिद चलें। और ख़िलाफत के साथ उन के एक सम्बन्ध को प्रकटन होता था। और फिर दिन का अधिकतर समय वह मस्जिद में ही गुज़ारते थे।

अमरीका में इस बार असाइलम लेने वाले तथा पनाह लेने वाले रिफयूजी पाकिस्तानी अहमदियों की बड़ी संख्या थी जो बहुत कठिन हालात से गुज़र कर मलेशिया थाईलैंण्ड श्रीलंका और नेपाल से वहां आए थे। उन से मुलाकात भी कई बार बहुत भावनात्मक अवस्था पैदा कर देती है। कुछ तो बहुत अधिक भावनात्मक हो जाते हैं। अल्लाह तआला करे कि उन को यहां जहां सुविधाएं मिलें वहां उन में यह भावना प्रत्येक समय ग़ालिब रहे कि उन्होंने धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देनी है और दुनिया की चकाचौंध में डूब नहीं जाना।

अब दौरे के बारे में कुछ बातें वर्णन करता हूं। प्राय: अमरीकन राजनीतिक लीडर भी पढ़ा लिखा वर्ग भी और साधारण लोग भी बात सुनने वाले और अच्छी बात की प्रशंसा करने वाले हैं पसन्द करने वाले हैं। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा उन तक सहीह तरीके से नहीं पहुंची। जिन लोगों तक पहुंची है जिन का जमाअत के साथ सम्पर्क है वे इस्लाम के बारे में अच्छी धारणा रखते हैं। यह हमारा काम है कि हम इस्लाम के वास्तविक सन्देश को अमरीका में भी और सारी दुनिया में मेहनत से सहीह तरीका से फैलाएं। इस्लाम का वास्तविक सन्देश जहां ग़ैर मुस्लिमों के लिए आंखें खोलने वाला है और इस्लाम की शान्ति वाली शिक्षा को वर्णन करने वाला है वहां मुसलमानों को भी भरोसा पैदा होता है, जो इस्लाम से बाहर हैं उन को भी पता चलता है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है। इस लिए हीन भावना की कोई आवश्यकता नहीं। यह प्राय: स्थान नें अनुभव होता है तथा अमरीका में भी हुआ कि दूसरे मुसलमान जब हमारी इस्लाम के बारे में सुन्दर शिक्षा के बारे में सुनते हैं तो उन में भरोसा पैदा होता है कि हमें किसी प्रकार के हीन भावना की ज़रूरत नहीं है जिस का प्रकटन भी उन्होंने किया। बल्कि इस्लाम ही दुनिया की समस्याओं का हल है अमन तथा सलामती स्थापित करने का माध्यम भी इस्लाम ही है। सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं के समाधान की तरफ भी इस्लाम से मार्गदर्शन करता है। कई दूसरे मुसलमानों ने जो हमारे प्रोग्रामों में आए थे इस बात का वर्णन किया। कि इस्लाम की सुन्दर शिक्षा जिस तरह से आप प्रस्तुत कर रहे हैं यही वास्तविक तरीका है। ग़ैर मुस्लिम तो यह सन्देश सुन कर हैरान भी होते हैं और अपने विचारों को प्रकट भी करते हैं कि अगर यह इस्लामी शिक्षा है तो लगता है कि यह सफल होने वाली है। कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

भी प्रस्तुत कर देता हूं।

फिलोडलफिया में जो मस्जिद बैयतुल आफियत का जो उद्घाटन हुआ इस में सम्माननीय डेविट इयूंन्ज़ (Hon.Dwight Evans) यह सदस्य हैं यू एस ए कांग्रेस के वह आए हुए थे। उन्होंने बहुत अच्छे शब्दों में कहा कि मैं आप का इस बड़े शहर में स्वागत करता हूं यह शहर जो बहन भाइयों जैसी मुहब्बत का शहर है। फिलोडलफिया के प्रशासन की तरफ से मैं एक मुस्लिम क्मयूनिटी को कहना चाहता हूं कि हम लोग अमन के सन्देश का यहां स्वागत करता हूं। फिर कहते हैं कि कुछ अमरीकियों की तरफ से कुछ साल पहले इस्लाम के विरुद्ध कुछ बातें सामने आई हैं। लेकिन कहते हैं कि मैं आप को बताना चाहता हूं कि यहां के अधिकतर लोग आप का स्वागत करते हैं हम आप लोगों के साथ हैं। नफरत द्वेष हसद तथा घृणा के विरुद्ध हैं। फिर अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि आप ने अमन स्थापित करने के बारे में बहुत अच्छा काम किया है। बदकिस्मती से हम अमरीका में एक अंधेरे युग से गुज़र रहे हैं। और इस तरह के जमाना में यह पैग़ाम बहुत अच्छा था। इस बात से साबित होता है कि मुसलमान क्मयूनि न केवल अमरीका बल्कि सारी दुनिया के लिए कितनी महत्त्व पूर्ण है। फिर यह कहते हैं कि हमें भविष्य में अमन तथा शान्ति चाहिए। फिलोडलफिया की धार्मिक आज़ादी के हवाले से बहुत महत्त्व है। फिलोडलफिया के बार में प्रसिद्ध है कि वहां हर एक धर्म के लोगों की आज़ादी के बारे में सन्धि हुई थी। कहते हैं किऔर यह स्थान आप लोगों की मस्जिद के लिए बहुत शानदार स्थान होगा।

तो ये विचार हैं । इसी तरह वहां कि एक मेयर भी आए हुए थे और कुछ दूसरे लीडर भी आए हुए थे। फिर मेयर जेमज़ केनी (James Kenney) ने भी कहा कि फिलोडलफिया शहर की तारीख़ से पता चलता है कि धार्मिक आज़ादी इस शहर के बुनियादी असूलूं में शामिल है। यह शहर इसी बुनियाद पर स्थापित किया गया है हमारा सम्बन्ध बेशक विभिन्न क़ौमों तथा नस्लों को लोगों से हो परन्तु यह शहर सभी लोगों का स्वागत करता है। फिर उन्होंने कहा कि हम एक दूसरे के साथ मिल जुल कर काम करें एक दूसरे के साथ मान तथा सम्मान के साथ काम करें। और दुनिया को यह बताएं कि हम एक साथ मिल कर रह सकते हैं। और हम अपनी समस्याओं को समाप्त कर सकते हैं। यह वह शिक्षा है जो वास्तव में इस्लाम की शिक्षा है जिसे दूसरे अपना रहे हैं और मुसलमान भूल रहे हैं।

फिर इस प्रोग्राम में एक जज हैरी श्वाटज़ (Harry Schwartz) साहिब भी शामिल हुए। वह कहते हैं कि मैं इस जमाअत से 25 सालों से परिचित हूं और यहां के सदर साहिब से डिनर पर कई समस्याओं के बारे में बात हुई है। फिर मेरे सम्बोधन के बाद उन्होंने कहा कि यह सन्देश जो है मुहब्बत आपसी भाईचारा और मिल बैठने का सन्देश है। अगर यह समझ लिया जाए तो मेरे विचार में हम सब बेहतर हालात में होंगे।

एक अफ्रीकी अमेरिकी नए अहमदी कहते हैं कि यहां मस्जिद की बहुत आवश्यकता थी। यह एक बहुत अच्छा केंद्र बन गया। ऐसा कहा जाता है कि परिवेश के सुधार के लिए दस साल लगते हैं, लेकिन मैंने दो वर्षों में सामाजिक सुधार देखा है, जो साबित करता है कि यदि लग्न है, तो इसे एक साथ मिल कर किया जा सकता है। और फिर सम्बोधन के बाद कहते हैं कि यह एक अद्भुत संदेश है और आप की हर बात दिल को छू जाती है। यह अहमदी नहीं हैं मुसलमान हुए हैं।

फिर एक अफ्रीकी अमेरिकी महिला का कहना है कि मुझे भाषण से बहुत कुछ सीखने को मिला। उम्मीद है कि अब हम इसे अपने जीवन का हिस्सा भी बनाऐंगे और यदि हम इन चीजों का पालन करते हैं, तो हम निश्चित रूप से सीधे रास्ते पर हैं। यह भी अहमदी भी नहीं थे।

फिर एक महिला हैं हानिया (Haniyyah) साहिबा कहती हैं वह कहती हैं कि जो संदेश आप लोगों ने दिया है इसके माध्यम से इस्लाम के ख़िलाफ फैलाई जाने वाली ग़लतफहमी का निवारण होगा। और बहुत ख़ुशी होती है कि यहां मुसलमानों का एक केंद्र बन गया है। लोगों में इस्लाम के ख़िलाफ एक पूर्वाग्रह पाया है जो पूरी तरह से ग़लत है। और आपका संदेश बहुत मज़बूत था। मुझे आशा है कि यह संदेश बहुत अधिक फैले और अमरीका के लोगों को इस्लाम की सच्चाई का पता चले।

एक स्थानीय काउंसिलर मस्जिद के उद्घाटन में शामिल हुए वह कहते हैं कि आपका शांति का संदेश बहुत महत्वपूर्ण था। विशेष रूप से, वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में संदेश अधिक महत्वपूर्ण रहा है। मेरे लिए यहां आना एक बड़ा सम्मान है। मैंने इस मस्जिद को अपने सामने बनते हुए देखा है। यहां इस मस्जिद की स्थापना इस क्षेत्र के लिए बहुत बरकत का कारण है। जिस संदेश को आपने लोगों को दिया है कि आप लोग पड़ोसियों की ज़रूरत के साथ उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों मुझे लगता है कि केवल फिलाडेल्फिया में ही नहीं सारे अमरीका में इस सन्देश की आवश्यकता है।

एक फिलिस्तीनी मुस्लिम महिला शामिल हुई थीं। यह कहती हैं कि आपका संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण था। मैं फिलिस्तीन के एक छोटे से गांव से संबंधित हूं। बचपन में मैंने जो सीखा है, वह आज आपके सम्बोधन में देखने को मिला है, यह सच्चा इस्लाम है जिसका उल्लेख किया गया है। हम जिस समुदाय से संबंधित हैं, हमारा कर्तव्य है कि एकजुट होकर शांति के लिए काम करें। फिर आप कहती हैं कि आपने वास्तविक रूप में मुस्लिम समुदायों का प्रतिनिधित्व किया है। यह तो इन अच्छे प्रकृति के लोगों का विचार है, लेकिन बाकी मुसलमान यह भी समझते हैं कि जमाअत अहमदिया ही वास्तव में इस्लाम का प्रतिनिधित्व कर रही है।

एक महिला शिक्षक कहती है कि आपका शांति का संदेश बहुत शानदार था। क्योंकि मैं कैथोलिक हूं लेकिन एक एक शब्द से सहमत हूं। मेरा मानना है कि इस्लाम शांति का संदेश देता है। इस्लाम मानवता की सेवा सिखाता है।

एक प्रोफेसर जो अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष का प्रतिनिधित्व कर रहे थे उन्होंने कहा कि इस शहर के लोगों के लिए शुभकामनाओं को प्रकट किया है इन का सम्बन्ध अब से नहीं है बल्कि आने वाले समय से है। एक बात जो मैंने आप में देखी है वह यह है कि आप वर्तमान समय के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि आप की नज़र आने वाले समय पर होती हैं और फिर उन्होंने बहुत अच्छे तरीके से सम्बोधन को सराहा। कहते हैं कि आप ने यहां एक बीज बोया है अब हमारा यह काम है कि इस का ध्यान रखें और इस को बढ़ाएं और इसे बढ़ाएं भाईचारे और मुहब्बत के मज़बूत वृक्ष में बदल दें।

एक महिला ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि आप ने जो यही कहा कि हम लोगों के आँसू पूंछेंगे। कितने लोग हैं जो यह कहते हैं? यह बहुत अद्भुत था। मैं अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सकी। अपना संदेश देने के लिए ज़रूरी नहीं कि जोरदार और भावुक भाषण हो। वह संदेश आपने बहुत प्यार और प्रेमपूर्ण तरीके से दिया है। मैंने यह कहा था कि हम गरीबों की मदद करने के लिए हर समय तैयार हैं और यदि कोई परेशानी में हो तो हम लोग होंगे जो इन आँसू पूछेंगे।

एक ग़ैर-अहमदी इमाम साहिब भी कार्यक्रम में शामिल हुए थे। वह कहते हैं कि अहमदियों के साथ मेरा पहला रिश्ता जमाअत की तरफ से किए गए क़ुरआन मजीद के कारण हुआ था। यह वह अनुवाद था जो मौलवी मोहम्मद अली साहिब ने किया है। फिर कहते हैं कि आपका संदेश बहुत अच्छा था। मुझे आप से सौ प्रतिशत सहमति है। यही हमारा मिशन और लक्ष्य है। हम सभी आदम की औलाद हैं और हमें एक-दूसरे की गुणवत्ता में सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए। हम ने मिलकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे संदेश को फैलाना है। अल्लाह तआला करे कि यह केवल उन के शब्दों न हों उस पर अनुकरण करने वाले भी हों।

फिर अगले दिन बाल्टीमोर (Baltimore) की मस्जिद का उद्घाटन किया गया, जिसका नाम बैयतुस्समद है। और यह भी एक चर्च की बिल्डिंग थी जो खरीदी गई है और फिर इसे ठीक करके उसे मस्जिद में बदल दिया गया है और संयोग से यह इमारत ऐसी रुख पर बनाई गई है कि लगभग 99.9% यह किबला रुख़ है कोई अधिक बदलाव की आवश्यक नहीं है। और क्योंकि वहां मैंने विस्तार वर्णन किए थे इसलिए मैं इस मस्जिद के कुछ विवरणों का भी वर्णन करता हूं। इसकी खरीद पर 20 मिलियन डॉलर का खर्च आया है। इस में पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग अलग हाल हैं, जिसमें 400 लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। इस के इलावा कार्यालय, पुस्तकालय, कक्षाएं, वाणिज्यिक रसोई, डाइनिंग हॉल आदि हैं। यह राजमार्ग पर स्थित है और लगभग 45,000 वाहन इस राजमार्ग पर से गुज़रते हैं।

बाल्टीमोर की मेयर स्वागत समारोह में आई थीं। यह कहती हैं कि आपने शांति के बारे में बात की थी। यह वह संदेश है जिस की आज के समय में समय में सब से अधिक आवश्यकता है। न केवल हमारे शहर में, बल्कि हमारे राज्य और फिर सारे अमेरिका और पूरी दुनिया को इस संदेश की सख्त जरूरत है। मैं समझती हूं कि यह संदेश हर किसी के द्वारा सुना जाना चाहिए। अगर हम सुनते हैं, तो हम

जान जाएंगे कि दुनिया की समस्याओं का एकमात्र समाधान शांति है और हम एक-दूसरे से प्यार करना सीखेंगे।

एक विश्वविद्यालय यहां बाल्टीमोर में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जहां हमारे बीच बीच अंतर हैं वहां हमारे मध्य में बहुत सी बातों में समानता है। और यह एक अद्भुत संदेश था जिसके माध्यम से हम समाज में एक बड़ा बदलाव कर सकते हैं। हमें एक-दूसरे का सम्मान करने के लिए मिलकर काम करना है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पर्यावरण में यह संदेश बहुत महत्वपूर्ण है। चूंकि अमेरिका को न केवल अपने लिए बल्कि हमारे बच्चों के लिए भी काम करना है। समाज में हर एक को साथ मिल कर आगे बढ़ना चाहिए। मुझे इस अद्भुत संदेश ने बहुत प्रभावित किया है।

फिर ज़िला 48 से एक राज्य प्रतिनिधि आई थीं वह कहती हैं कि यह संदेश सुन कर में बहुत प्रभावित हुई, खासतौर पर उन स्थितियों में जब मुसलमानों के हवाले से समाज में भय पाया जाता है और इस देश में जातीय समूहों में विभाजन है। मैं इन परिस्थितियों में बहुत ख़ुश हूं कि आपने हमारा ज़िम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित किया है। आप ने हमें एक-दूसरे से प्यार करने और किसी से नफरत न करने के लिए कहा है। ये वे बातें हैं जो हमें चाहिए। प्यार, शांति, न्याय बाल्टीमोर को यह उच्च मूल्य प्राप्त करने की आवश्यकता है। उनके पति भी थे उन्होंने भी कहा कि मेरी पत्नी ने कहा है कि यह हमारे लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संदेश है। फिर कहते हैं कि हम ख़ुद कोशिश कर कि जितना चाहे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें उस का उतना प्रभाव नहीं होगा जितना इमाम जमाअत अहमदिया के उपस्थित होने से हुआ है। और मुस्लिम समुदाय न केवल यहां बल्कि सारे अमेरिका में, एक महान भूमिका निभा रहा है।

एक पादरी साहिब फादर जो (Father Joe) भी शामिल हुए। वह कहते हैं कि आपके सम्बोधन के दौरान मैं एक बात से सहमत था, क्योंकि मैं बाल्टीमोर में कई बार अहमदिया मस्जिद गया हूं और मैं विश्वास से कह सकता हूं कि जो भी आपने कहा है वह पिछले कुछ वर्षों से दूसरी मस्जिद में होता देख रहा है। मैं देख रहा हूँ मस्जिद सभी समुदायों के लिए खुली है। मैं कई बार जुम्अ: में भी गया हूं। मैं इन सभी चीजों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति का गवाह हूं। मैं इन चीजों को सुनकर बहुत ख़ुश हूं। यहां विभिन्न धर्मों और शांति की बात करने वाले लोग हैं। जो शान्ति की बातें कर रहे हैं। यही वह बात है जिस की न केवल हमारे इस शहर को बल्कि सारी दुनिया को इस की ज़रूरत है।

फिर एक महिला अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है कि आजकल की परिस्थितियों में मेरे लिए इस सम्बोधन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण संदेश था। मुसलमानों और ग़ैर-मुसलमानों, काले और सफेद के बीच कई सीमाएं हैं। हमें इन सभी समाधानों को ढूंढना है और पारस्परिक सम्मान से यह संभव है। और आपने पड़ोसी की परिभाषा की है और जो आप ने पड़ोसी से उत्तम व्यवहार का संदेश दिया है वह मेरे लिए बहुत शानदार है। इस संदेश को सुनकर, मुझे इस्लाम के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित किया है। और आप लोगों का बहुत बहुत धन्यवाद।

41 ज़िला के एक प्रतिनिधि (Representative of State) थे बिलाल अली साहिब ,मुस्लिम थे। कहते हैं कि आप ने जो सन्देश दिया है इस की गूंज यहां सब लोगों में सुनाई दे रही है। पारस्परिक एकता, प्यार, मुहब्बत और प्रेम का माहौल स्थापित करने में यह संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस्लाम के ख़िलाफ जो शंकाएं पाई जाती हैं उन्हें हटाने में मदद करेंगी। फिर आप कहते हैं कि आपने हमें कई मुद्दों पर समाधान दिया है, ख़ासतौर से इन परिस्थितियों में जहां राजनीतिक और सार्वजनिक रूप से जो लोगों के वक्तव्य हैं कोशशें हैं, वे भी मुस्लिमों के ख़िलाफ भावनाओं को उभार रही हैं। आप ने यहां आ कर इन मामलों के लिए बहुत अच्छी गाइड लाईन दी है। ऐसे माहौल में एक बहुत ही हिक्मत वाली दलीलों से सन्देश को पहुँचाया है जिस से कोई भी अक्ल रखने वाला इनकार नहीं कर सकता है। मैंने परिवेश में शान्ति स्थापित करने का बहुत अच्छा गुर आप से सीखा कि अपने पड़ोसी से उत्तम व्यवहार करें आपको पूरी दुनिया को बदलने की ज़रूरत नहीं है, केवल उन लोगों से प्यार बांटे जिन से आप मिलते जुलते हैं, उनकी सेवा करें, फिर अपने आप समाज शांतिपूर्ण हो जाएगा। फिर यह भी एक आसान तरीका आपने कहा कि इस्लाम कहता है कि सच्चाई की दावत करो, असल तो आप का अपना नमूना है जिस से सच्चाई की दावत शुरू हो सकती है फिर यह कहते हैं कि बाल्टीमोर में स्थिति का मुकाबला करने के लिए, अहमदिया मुस्लिम जमाअत मैदान में आई है और समाज में सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है। यह एक बहुत अनुकरणीय नमूना है। अल्लाह तआला जमाअत को वहां इस प्रकार का नमूना दिखाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

एक मिशेल (Michelle) साहिबा हैं, प्रेस्बिटेरियन चर्च (Presbyterian Church) में मिनस्टर हैं। कहती हैं कि बड़ा अच्छा पैग़ाम था। आपने पारस्परिक एकता पर बल दिया। डर ख़त्म करके प्यार स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित करने की तरफ ध्यान दिलाया है। यह संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण है। फिर पड़ोसियों से अच्छे व्यवहार करने की शिक्षा है मेरे लिए यह शिक्षा नई है। मुझे आज पता चला है कि ईसाई धर्म में जो प्यार की शिक्षा है ये तो वही बाते हैं, जबकि मीडिया इस्लाम के बारे में एक अलग चीज़ प्रस्तुत करता है।

एक हिस्टोरियन (historian) डॉक्टर फातिमा कहती हैं कि मेरी सपेशलाईज़ेशन "यू.एस.ए में इस्लाम" और इस संबंध में मैं यू.एस.ए में इस्लाम के इतिहास पर काफी काम किया गया है। मैं एक धार्मिक विद्वान नहीं हूं बल्कि सिर्फ एक इतिहासकार हूं। इस संबंध में आप ने जो यह कहा कि हजरत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने इस दौर में इस्लाम नवीनीकृत है मेरा ध्यान उसी तरफ लगा हुआ है और अब मैं इस बारे में अधिक अनुसंधान करूंगी। मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि अब मेरी अनुसंधान की धुरी न केवल हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम हैं बल्कि आप की लेखनी तथा उपदेश भी हैं जिनके माध्यम से आप ने यह पुनरुद्धार किया। आपका संदेश एक अद्भुत संदेश है। आपने इस्लामिक सुंदरता को अन्य धर्मों तक सीमित नहीं किया, बल्कि ग़ैर-धार्मिक लोगों से भी प्यार करने का उपदेश दिया है। फिर कहती हैं कि आपके पास यह विचार है कि रंग और जाति और धर्मके भेदभाव के बिना हम सभी मानव जाति के लिए काम करने के लिए मिलकर काम करें। क्या ही अच्छा संदेश है एक मुसलमान के रूप में, हमें संदेह के रूप में देखा जाता है, इसलिए एक मुसलमान की तरफ से इस्लामी शिक्षा की व्याख्या करना एक उत्तम कदम है।

फिर वर्जीनिया (Virginia) की मस्जिद का उद्घाटन किया गया और इसका नाम "मस्जिद मसरूर" है। इसका उद्घाटन 3 नवंबर को हुआ था। यह भी एक चर्च की इमारत है जो ख़रीदी गई थी। कुल क्षेत्र 17.6 एकड़ है और इसे पांच मिलियन डॉलर में खरीदा गया था, और इसको ठीक करने पर $ 75,000 से थोड़ा अधिक खर्च किया गया था। यह भी लगभग एक किब्ला की तरफ वाली इमारत है। इसका छत वाला भाग चौबीस हज़ार चार सौ वर्ग फुट है। पुरुषों और महिलाओं के अलग हाल हैं, जिस में 650 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस के इलावा ग्यारह कमरे हैं जिनका उपयोग कार्यालयों के रूप में किया जाएगा। एक पुस्तकालय, एक सम्मेलन कक्ष, एक वाणिज्यिक रसोईघर है।

यहाँ एक दोस्त कोरी स्टुअर्ट (Corey Stewart) कि सोवियत रिपब्लिकन सीनेट (Senate) के उम्मीदवार हैं वह कहते हैं कि जो मैंने भाषण सुना वह आकर्षक और ज्ञान से भरा हुआ था। संयुक्त राज्य अमेरिका और पूरी दुनिया को मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं का सन्देश बहुत ध्यान से सुनना चाहिए, ख़ासकर जब दुनिया की परिस्थितियां अच्छी नहीं हैं। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम धार्मिक स्वतंत्रता का प्रचार करें, इसलिए यह मस्जिद हमारे लिए बहुत गर्व की बात है क्योंकि आप देश के लिए बहुत कुछ करते हैं।

एक मेहमान मैट वाटर्स (Corey Stewart) जो वर्जीनिया के सीनेट (Senate) के उम्मीदवार हैं, यह भी कहते हैं कि मैंने सम्बोधन सुना है। अब मैं और अधिक पढ़ूंगा और इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करूंगा और मैं और जानने के लिए आप की मस्जिद में आना चाहूंगा। एक ईसाई मेहमान कहता है कि यह संदेश वर्तमान स्थिति के अनुरूप था। यह बहुत महत्त्वपूर्ण सन्देश था। और हमने शांति का संदेश सुना है मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हों और यह आश्चर्यचकित करने वाला था।

फिर 51 ज़िला से वर्जीनिया के प्रतिनिधि ने बताया कि संदेश बहुत अद्भुत था। विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका की वर्तमान स्थितियों में यह बहुत शानदार था। आपका संदेश प्यार, एकता का था। आपने कहा कि दूसरों को ख़ुद पर प्राथमिकता दो, निस्वार्थ हो कर सेवा करते रहो। आज के राजनीतिक माहौल में, हमें इस प्रकार के ही संदेश की आवश्यकता है। दूसरों को ख़ुद पर प्राथमिकता देना एक बहुत अच्छा और रूहानियत से भरपूर सन्देश है। अपने पड़ोसियों का ख्याल रखना, दूसरों के आराम का ध्यान रखना , दूसरों को अपने पर प्राथमिकता देना बहुत ही शानदार है। ऐसे अवसरों पर, जबकि अपने अहम को प्राथमिकता

दी जाती है आपने दूसरों को प्राथमिकता देने की बात की है।

इसी प्रकार एक मेहमान एलेक्स (Alex Keiseh) कहते हैं कि मैं बहुत ही प्रभावित हुआ हूं। मैं इतना भावनात्मक हुआ हूं कि मैं एक होलो कास्ट सर्वेक्षक हूं। और संदेश बहुत प्रभावशाली था। आपका एक एक शब्द मेरी रूह तक प्रभाव कर रहा था। आपका संदेश इस दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था कि हम नफरत से लड़ नहीं सकते। नफरत को दूर करने के लिए केवल एक ही रास्ता है और वह यह है कि प्यार को स्थापित करने के लिए जिहाद किया जाए। यह मुहब्बत प्रत्येक धर्म के अन्दर पैदा की जानी चाहिए। और हमारे समाज में ऐसे प्यार के कई उदाहरण मौजूद हैं, जैसा कि आप लोगों का कार्यक्रम है। लेकिन आजकल जो मीडिया में देखने को मिल रहा है वह एक छोटा सा अल्पसंख्यक है और भ्रामक तत्व हैं और मीडिया उन्हें बढ़ा चढ़ा कर पेश कर रहा है। हमें इस के स्थान पर परस्पर प्यार को फैलाना चाहिए। और वह बहुत भावनात्मक थे। बाद में मुझे मिले तो पहले तो बहुत भावनात्मक थे परन्तु बाद में रोने लग गए और कहा कि इस संदेश ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया है।

एक महिला शनीन सहहा न्यू जर्सी में एक शल्य चिकित्सा समन्वयक हैं, कहती है कि इस्लाम की सुंदर शिक्षाओं के बारे में दोबारा बताया गया। मेरा भी यही विचार है कि कुछ व्यक्तिगत लोगों के बुरे कृत्यों के कारण, पूरे धर्म को दोषी ठहराना अपनी ज़ात में ज़ुल्म से कम नहीं। अमेरिका में हर दिन कोई न कोई दुर्घटना और हादसा होता है, लेकिन इस के लिए सारे धर्म को दोषी ठहराना ग़लत है। एक मेहमान जो पिछले 40 वर्षों से पुलिस विभाग में काम कर रहे हैं, कहते हैं कि यह संदेश पूरी दुनिया के लिए संदेश था। इस में शांति और मुहब्बत, प्रेम और अधिकारों की आवश्यकता के बारे में नसीहतें की गई हैं। हमारे यहां विभिन्न रंगों और नस्लों के चार लाख साठ हज़ार लोग बसते हैं, और आज के संदेश में सबसे महत्त्वपूर्ण बात पड़ोसी के अधिकारों के बारे में थी।

फिर एक महिला डॉक्टर किम्बर्ली (Kimberly) जो क्रिमिनोलॉजिस्ट (Criminologist) हैं और लेखक भी हैं उन्होंने पी.एच.डी की हुई है। यह कहती हैं कि आज के सम्बोधन में शांति और न्याय के संबंध में बहुत गहरे संदेश प्राप्त हुए। और रंग और जाति में भेदभाव के बिना, प्रत्येक को इस संदेश के अनुसार एकता का माहौल स्थापित करना होगा। आज के सम्बोधन में, आपने इस्लाम की वास्तविक प्रकृति को रखा है और इसका सारांश शांति और न्याय और समानता का माहौल पैदा करना है। फिर महोदया अपने भाव बताते हुए भावुक भी हो गई थीं और आँसू में डूब कर कही रही थीं कि आजकल जो लोग अत्याचार और बर्बरता के प्रदर्शन दिखा रहे हैं और धर्म के नाम पर हमारे समुदाय और देश में दंगे फैला रहे हैं उन का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है और यह जानना प्रत्येक के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

एक महिला लॉरेन (Lorraine) अपने विचारों को प्रकट करती हुई कहती हैं। मैं इस क्षेत्र में तीस साल से रह रही हूं और यहां बदलती स्थितियों को देखा है। हाल ही में गोलीबारी की घटनाएं बहुत दुखी करने वाली हैं। इस तरह के अवसरों पर प्यार मुहब्बत और सहिष्णुता का सन्देश बहुत शानदार था। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे भी यहां आमंत्रित किया गया था। मुझे यहां आकर अहमदिया जमाअत के बारे में बहुत कुछ जानने का अवसर मिला है। मस्जिद इस क्षेत्र में एक ख़ूबसूरत वृद्धि है। इस में कोई ख़तरा नहीं है। यह एक शांतिपूर्ण जगह है। मैं एक मुसलमान नहीं हूं और मैं इस मस्जिद में आई हूं, मेरा यहां स्वागत किया गया है, यही हमारा समाज है। मैं कहना चाहती हूं कि अब यहां अन्य प्रोग्राम भी होंगे। इन कार्यक्रमों में मुसलमानों के अलावा अन्य धर्मों से लोगों को आमंत्रित किया करें।

इन मस्जिदों के उद्घाटन के अलावा, अक्सर यह जानते हैं कि ग्वाटेमाला में ह्यूमेन्टी फर्स्ट का हस्पताल खोला गया है। वहां भी कुछ राजनीतिक लोगों के साथ संबंध हैं। वहां की कांग्रेस के एक सदस्य हैं जो जलसा सालाना यू.के में दो बार आ चुकी हैं। वह वहां हवाई अड्डे में स्वागत करने के लिए वहां आई हुई थीं और उन्होंने अस्पताल के बारे में बहुत अच्छे शब्द व्यक्त किए और जमाअत को धन्यवाद दिया कि जमाअत हमारे देश में अस्पताल खोल रही है और समुदायों के भीतर प्यार और दोस्ती पैदा करने की कोशिश कर रही है।

रॉबर्ट कैनो, (Robert Cano) जो पैराग्वे में वॉयस सचिव शिक्षा हैं वह इस उद्घाटन समारोह में शामिल हुए और कहा कि यह एक महान घटना थी। मुझे आश्चर्य है कि एक जमाअत के लोगों ने आपस में सहयोग करते हुए इस को पूरा किया है और ज़रूरतमंदों की मदद के लिए यह सब कुछ किया है। और यह मनुष्यों से प्यार करने की वास्तविक अभिव्यक्ति है। और फिर कहते हैं कि मानवता इसी प्रेम के इस मार्ग को अपनाएगी, फिर दुनिया में शांति स्थापित होगी और इस्लामी धर्म और संस्कृति को बहुत करीब से जानना के मेरे लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। जमाअत अहमदिया के बारे में बहुत से सवाल मेरे दिल में थे, जिनके जवाब मुझे यहां आकर मिल गए हैं। और कुछ सालों से, जमाअत अहमदिया पराग्वे में भी स्थापित हो चुकी है। इन्हीं की दावत पर पैराग्वे से यहां पर आए हुए थे।

एक गुएटे माल की डॉक्टर थीं, डायाना (Diana) वह कहती हैं, कि इस सम्बोधन में जो जो ग़रीबों की मदद करने का संदेश था। मैं इस पर ख़ुद भी अनुकरण करती हूं और कहती हैं कि ख़ुदा का शुक्र है कि धर्म भी यही सिखाता है कि ग़रीबों की मदद की जाए और यही ख़लीफा ने अपने भाषण में कहा है।

फिर एक गोएटे मालिन पत्रकार हैं वह कहते हैं कि जिस बात ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह यह है कि धर्म में बाध्यता नहीं है बल्कि हमें एक दूसरे का ख्याल भी रखना चाहिए और यही संदेश इमाम जमाअत ने हमें दिया। और यह भी कि हम सभी के बराबर अधिकार हैं। प्रत्येक इंसान के पास अच्छी गुणवत्ता का जीवन होना चाहिए।

एल पेरीडिको (El Peridico) अख़बार के एक पत्रकार फर्नांडो पिनाता (Fernando Pineta) का कहना है कि इस भाषण का मुझ पर बहुत बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ है जो आप ने की और मुलाकात भी बहुत अच्छी रही। और मैं यह कहना चाहूंगा कि नासिर अस्पताल की परियोजना एक महान परियोजना है और हमें इस देश में और भी अधिक परियोजनाएं होनी चाहिए।

फिर एक बैंक अधिकारी हैं कि आपके इस सम्बोधन का सारांश यह था कि यह सृष्टि के साथ सहानुभूति व्यक्त करना और यहां जो आप ने नासिर हस्पताल खोला है यह इस का एक स्पष्ट उदाहरण है।

फिर, एक बैंक मैनेजर, वह कहते हैं कि बहुत ही सुंदर और आसानी से समझने वाला संदेश था, यह पूरी मुस्लिम उम्मत द्वारा मानवता का समर्थन करने के लिए दिया गया है। और यह बात भी दिलचस्प थी कि जमाअत अहमदिया के दर्शन से आज परिचित हुआ हूं और अब में और जानकारी प्राप्त करूंगा।

ग्वाटेमाला में रिव्यू आफ रिलीजन्स के स्पेनिश अंक का भी शुभ आरम्भ किया गया, जो नई संख्या आरम्भ हुई है। अमेरिकी, लैटिन अमेरिका और मध्य अमेरिका, आदि में 400 मिलियन लोग आबादी है जो स्पेनिश बोल रहे हैं। जब स्पेन की तरफ हमारा ध्यान पैदा हुआ तो वहाँ ग्वाटेमाला में हमारी एक बहुत निष्ठावान अहमदी डेविड (David) साहिब हैं, यह वहाँ ग्वाटेमाला के पहले अहमदियों में से हैं, कहने लगे कि आप का ध्यान स्पेन की तरफ तो है कि वहाँ इस्लाम फैलाना चाहिए, जिनकी आबादी केवल 40 मिलियन है, जबकि हमारे देश की जनसंख्या 400 मिलियन है, इस तरफ आप की ध्यान नहीं है। इसके बाद फिर नियमित मिश्नरियों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया और उन्होंने जामिया के छात्रों को भी भेजना शुरू कर दिया। अब ख़ुदा के फज़्ल से वहां जमाअतें स्थापित हो रही हैं तो बहरहाल वहां स्पेनिश भाषा में रिव्यू आफ रिलेजन्स का आरम्भ किया गया है।

ये तो ग़ैरों की प्रतिक्रियाएं हैं। ग्वाटेमाला में विभिन्न पड़ोसी देशों के, स्पेनिश भाषी मुलकों के अहमदी शामिल हुए थे अस्पताल के उद्घाटन का कह लें या मेरी मुलाकात के लिए, उनके भी बड़े भावनात्मक प्रतिक्रियाएं थी, जो पहली बार समय के ख़लीफा से मिले और ख़िलाफत से प्यार उनकी आँखों से और उन के दिलों से फूट पड़ रहा था।

मैक्सिको से आने वाली एक नई बैअत करने वाली औरत लौरा मातील्ड (Laura Matilde) कहती हैं कि बहुत समय पहले, ग्वाटेमाला की यात्रा के बाद, मेरे दिल में एक चीज़ मजबूत हो गई थी कि जहां ख़ुदा तआला चाहता है मैं वहीं पर हूं। मेरे दिल में इस बारे में कोई संदेह नहीं है कि मैं आध्यात्मिक और भावनात्मक रूप से बहुत सहज और शांतिपूर्ण महसूस कर रही हूं। दूसरे देशों के अहमदी भाई बहन से मिलकर भी ईमान ताज़ा हुआ और सबसे बढ़कर समय के ख़लीफा के पीछे नमाज़े अदा कर के मेरा ईमान अल्लाह तआला और अहमदियत पर यानी वास्तविक इस्लाम और भी पुख्ता हो गया। मेरी इच्छा है कि मैं इस रास्ते पर स्थापित रहूं। अल्लाह तआला करे कि इसी तरह हो।

फिर मैक्सिको से आने वाले एक नए अहमदी इवान फ्रांसिस्को (Ivan Francisco) साहिब कहते हैं कि समय के ख़लीफा के हाथ पर बैअत की है।

मस्जिद में बैअत का एक समारोह था,तो एक इस प्रकार का क्षण था जिसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सका। उस पल में मैंने शारीरिक रूप से महसूस किया जैसे कि मेरा शरीर गर्म हो गया था और मेरे पसीने बहने लगे और ऐसा लगता था कि जैसे मेरे शरीर से एक करंट दौड़ रहा था और जाते जाते अपने साथ सभी पापों को भी अपने साथ ले गया। ख़ुदा तआला का लाख लाख शुक्र है कि उस ने हमें ख़िलाफत प्रदान की है। मैं जानता हूं कि यह मेरे लिए अच्छाई की तरफ बढ़ने का एक कदम है और मेरे अन्दर एक परिवर्तन लाएगा।

फिर मेक्सिको से आने वाली एक नई बैअत करने वाली मिगुएल एंजेल (Miguel angel) साहिब कहते हैं कि सच्चाई यह है कि इस्लाम तथा अहमदियत के बीच में कोई सीमा नहीं है और किसी प्रकार की कोई सीमा नहीं है। जो हमें अलग कर सके। हम सभी भाई हैं। यदि कोई अंतर है, तो भाषा का है वरना हम सब भाई-भाई हैं। समय के ख़लीफा के पीछे नमाज़ें पढ़ने के लिए बेशक हम दस से पन्द्रह देशों के लोग आए हुए थे परन्तु हम एक थे और ख़लीफा के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे।

फिर, विक्ते ब्रायनस Vicente Briones कहते हैं कि मेरा सम्बन्ध मैक्सिको सिटी जमाअत से है। जब मुझे बताया गया कि मुझे ग्वाटेमाला जाने का मौका मिला है, तो मैं बहुत ख़ुश था और यह सुना कर कि वहां पर समय के ़लीफा से मुलाकात होगी मेरी ख़ुशी और बढ़ गई। जब हमारी मुलाकात हुई तो मैं बहुत ख़ुश हुआ क्योंकि मुझे उनके साथ पर्याप्त समय बैठने का मौका मिला था। मैंने कुछ समय पहले मैक्सिको सिटी में बैअत की थी परन्तु हाथ पर बैअत करना मेरे जीवन का एक इस प्रकार का अवसर था जिसे मैं शब्दों में नहीं बता सकता। कह सकते हैं कि मैं अपने आंसुओं को पूछंते हुए कहा कि यह मेरे जीवन का सबसे सुंदर दिन था।

होंडुरास (Honduras) देश से आने वाली नई बैअत करने वाली रोसा डेल्मी (Rosa Delmi) साहिबा कहती हैं कि पहली बार मुझे अपने देश से बाहर जाने का अवसर मिला और मुझे इतनी लंबी यात्रा करनी पड़ी। हम ने होंडुरास से ग्वाटेमाला जाने के लिए 16 घंटे लग गए। यद्यपि हमें सफर में विभिन्न कष्टों का सामना करना पड़ा लेकिन जैसे ही जमाअत की मस्जिद और समय के ख़लीफा को देखा सफर के सारे कष्ट दूर हो गए। जमाअत के बहुत ही प्यारे और बहुत ही अच्छे लोगों से मिलने का अवसर मिला। जिन्होंने मेरे साथ अपने परिवार के सदस्यों के रूप में प्यार किया। अमेरिका से आई हुई एक अहमदी महिला ने मुझे बताया कि मैं उसकी बेटी की तरह हूं। इस यात्रा का सबसे अच्छा हिस्सा एक समय के ख़लीफा के साथ मुलाकात थी। मैंने व्यक्तिगत रूप से बात नहीं की क्योंकि मैं अनुभव कर रही थी कि मैं एक अलग ही दुनिया में हूं। मैं चाहती थी कि बस बैठ कर देखती रहूं और बातें सुनती रहूं। एक इस प्रकार का अनुभव था जो अविश्वसनीय है। इस यात्रा के दौरान, जमाअत की शिक्षा के बारे में मेरा ज्ञान पहले से बढ़ गया, और हमें वहां नज़्म पढ़ने का अवसर मिला।

फिर होंडुरास के ही एडविन आर्मंडो (Edwin Armando) साहिब कहते हैं कि इस यात्रा की सबसे अच्छी बात समय के ख़लीफा से मिलने का सौभाग्य पाना था और मैंने बहुत सारे जो प्रश्न पूछे थे इन सवालों के जवाब मुझे मिल गए।

फिर इक्वाडोर (Ecuador) के नए अहमदी कहते हैं कि समय के ख़लीफा की मौजूगी में मुझे एक अमूल्य ख़ज़ाना प्राप्त हुआ और आध्यात्मिकता, शांति ख़ुशी और प्रसन्नता की भावना मेरे अंदर समा गई। मुझे बहुत शान्ति मिली। बैअत के समय जब आप ने अपना हाथ मेरे हाथ पर रखा तो यह एक इस प्रकार का सौभाग्य था जो मुझे पहले कभी नसीब नहीं हुआ।

इक्वाडोर से एक लज्ना की सदस्य जो एक साल पहले अहमदी हुई हैं कहती हैं कि ग्वाटेमाला की यात्रा मेरे और मेरे बेटे के लिए बहुत सुखद थी। जब हमने पहली बार समय के ख़लीफा को देखा, तो हमारे लिए एक विशेष अवसर था, क्योंकि उसने हमारे भीतर शांति, प्रेम और धैर्य की भावना पैदा की। मुलाकात के दौरान, जब मेरा बेटा ख़लीफतुल मसीह से हाथ मिलाया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई और हम इसे अपने लिए एक ख़ुश-नसीबी और बरकत मानते हैं। इक्वाडोरियाई वापसी की यात्रा हमारे लिए बहुत दु:ख भरी होगी, क्योंकि हमें अहमदी भाई और समय के ख़लीफा बहुत याद आऐंगे और हम उम्मीद करते हैं कि हम दोबारा मिलेंगे।

फिर ग्वाटेमाला के एक नए अहमदी सोलेमन रॉड्रिगेज़ (Soliman Rodrigez) साहिब कहते हैं कि समय के ख़लीफा गोएटेमाला आना हमारे लिए एक बड़ी ख़ुशी की बात है। हमारी जमाअत पर अल्लाह तआला का फज़्ल है कि आप यहां आए। जब हमें पता चला कि आप ग्वाटेमाला आ रहे हैं, तो हमारी ख़ुशी की सीमा न रही। मेरे अंदर एक आध्यात्मिक मज़बूती पैदा होने लगी और इसमें कोई संदेह नहीं था कि अब में अपने अन्दर एक परिवर्तन अनुभव कर रहा हूं।

फिर एक ग्वाटेमाला की एक नई बैअत करने वाली लिसा पिंटो (Lisa Pinto) कहती हैं कि मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूं कि ख़लीफतुल मसीह ग्वाटेमाला आए। यह मेरे लिए गर्व और सम्मान का विषय है और यह मेरे लिए एक महान अनुभव था। मेरा दिल ख़ुशी से भर गया है।

फिर, ग्वाटेमाला के ही एक साहिब डोमिंगो टियूल (Domingo Tiul) कहते हैं, कि मैं कैबुन (Cabun) जमाअत से संबंधित हूं और यहां मैंने ख़लीफतुल मसीह के आगमन पर ख़ुद को भावनात्मक रूप से पाया। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे ख़लीफ़ा के साथ समय बिताने का मौका मिला। थोड़ा समय ही हुआ है कि यह अहमदी हुए हैं शायद उन्होंने ही मुझे बहुत भावनात्मक तरीके से बताया था कि हमारे क्षेत्र में बहुत ग़रीब लोग हैं, सीमा पर एक बहुत ही दूरस्थ क्षेत्र है, और सड़कें पर्याप्त नहीं हैं। दुआ करें और किसी को भेजें ताकि मेरी क़ौम के लोग इस क्षेत्र में भी अहमदी मुस्लिम हों। और जो अल्लाह तआला की कृपा मुझे प्राप्त हुई है, मुझे एक इनाम मिला है, वह मेरी क़ौम में भी पहुंचें। और उन्होंने एक बड़े भावनात्मक तरीके से दुआ की थी। अल्लाह तआला करे कि वहां भी जमाअतें फैलें।

फिर ग्वाटेमाला से ही, मार्टा टियुल (Marteza Tiul) साहिबा कहती हैं कि पहले समय के ख़लीफा को केवल तस्वीरों में देखा था। अब क़रीब से देखने का मौका मिला है बैठने का मौका मिला और ख़ुद में बड़ा बदलाव महसूस कर रही हूं।

तब क्लाउडिया (Claudia) साहिब का कहना है कि मैं बहुत ख़ुश हूं। और अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं। अल्लाह तआला ने मुझ पर फज़्ल किया। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जो मैं अपनी भावनाओं को समझा सकूं। और अपने ईमान तथा विश्वास को बढ़ाने के लिए दुआ का निवेदन किया।

फिर च्याप्स Chiapas मेक्सिको से Khadija साहिबा कहता हैं, अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूं कि ख़लीफतुल मसीह से मिलने का अवसर मिला है। हमारे सवालों के जवाब मिले। मेरा प्यार इस्लाम की ओर बढ़ गया। बैअत करने से मेरा ईमान नए सिरे से बढ़ गया है और मैं दुआ की निवेदन करती हूं कि मेरे और मेरी पूरी जमाअत च्यालसा के ईमान तथा इर्फान में वृद्धि हो।

यास्मीन गोमेज़ (Yasmin Gomez) साहिबा का कहती हैं कि बहुत ही सुंदर याद है। और बहुत सुन्दर अनुभव है। मेरी भावनाएं ऐसी थीं कि मुझे ख़ुशी

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

से रोना आ रहा था और मैं समझा नहीं सकती। इस मुलाकात के बाद, मुझे अपने जीवन को बेहतर बनाने का अवसर मिलेगा।

फिर एक और सुर्या गोमेज़ (Surayya Gomez) साहिबा हैं कहती हैं कि मेरी ऐसी भावनाएं हैं जो मेरे दिल की गहराइयों से निकल रही हैं। और मुझे एक बहुत बड़ा अनुभव हुआ है। अल्लाह तआला ईमान तथा श्रद्धा में बढ़ाए।

मेक्सिको के एक नए अहमदी ख़युसस (Jesus) साहिब कहते हैं कि जमाअत से सम्बन्ध बनाना एक बहुत बड़ा इनाम है। मैं भाग्यशाली हूं कि ख़ुदा तआला ने मेरी दुआएं सुनी हैं। मैं अंधेरे में था, अल्लाह तआला मुझे और मेरे परिवार को प्रकाश की ओर लाया और मुझे अपना जीवन बदलने का अवसर मिला। और फिर मैंने इबादत आदि के बारे में प्रश्न पूछे, जिस के मुझे बहुत संतोषजनक उत्तर प्राप्त हुए।

लैला लतीफ साहिबा वह भी कहती हैं कि पहले तो टी वी के माध्यम से सम्बन्ध था अब मिली हूं तो भावनाऐं ही और हैं

पनामा (Panama) से एक व्यक्ति हैं हैली दोरो (Heliodoro) साहिब जो अपनी पत्नी और बेटी के साथ आए थे कहते हैं कि मेरी मुलाकात का दिन सुख से भरपूर दिन था जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता और बड़ा प्रेम और ईमानदारी का उन्होंने व्यक्त किया है

बेलीज़ (Belize) से एक प्रतिनिधिमंडल आया, इस में से गोल्डा मार्टिना (Golda Martina) सहिबा कहती हैं कि यह एक अनूठा अवसर और बरकतों वाला अवसर था। मैं बहुत भावुक हो गई थी और हमेशा मुझे यह सफर याद रहेगा।

फिर एक और परिसर निकोल एविलेज़ (Nicole Avilez) का कहना है कि एक महान भावनात्मक मुलाकात थी और समय के ख़लीफा ने मुझे ब्रिटेन जलसा में आने के लिए भी आमंत्रित किया। इसकी मुझे बहुत खुशी है। लिस्बन फ्लोरेंटीना (Florentina) के एक और सदस्य ने कहा कि यह बहुत ख़ुशी का अवसर था। मुलाकात का अवसर मिला और मिलकर शांति मिली। एक 13 वर्षीय लड़की कह रही है कि मुझे डर था कि समय के ख़लीफा के सामने कोई इस प्रकार की बात न करूं जिस से मुझे शर्मिंदगी हो लेकिन मुलाकात बहुत अच्छी थी। ख़िलाफत का सम्मान तथा इज़्ज़त उन में बहुत है फिर इन बच्चियों ने " है दस्ते किब्ला नुमा" नज़्म पढ़ी।

इसी प्रकार, कई महिलाएं और लोग हैं जो ग्वाटेमाला से विभिन्न देशों में आए और एक लंबी यात्रा कर के बहुत श्रद्धा तथा वफा का उन में प्रकटन हुआ था। अल्लाह तआला सभी में श्रद्धा तथा वफा बढ़ाता चला जाए और उन्हें असली अहमदी बनाए।

संयुक्त राज्य अमेरिका की मीडिया टीम की तरफ से कवरेज। अल्लाह तआला की कृपा के साथ, संयुक्त राज्य अमेरिका की मीडिया टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया है और उन के अच्छे संबंध हैं। अब इस में थोड़ा परिवर्तन किया गया है, लेकिन जो पहली टीम उस ने भी बहुत अच्छा काम किया था। अमेरिका में टीवी के माध्यम से, कुल अट्ठाई लाख उठानवे हज़ार से अधिक लोगों तक सन्देश पहुंचा। रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से, कुल 53 लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुंचा। डिजिटल फोरम , वेबसाइटों और सोशल मीडिया के माध्यम से 20 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। समाचार पत्रों में मेरी यात्रा के बारे में जो ख़बरें आईं उन में 45 समाचार प्रकाशित हुए। इनमें प्रसिद्ध समाचार पत्र बाल्टी मूरसन (The Baltimore Sun) फिलाडेल्फिया इनक्वियर (The Philadelphia Inquirer) और धार्मिक समाचार सेवा (Religion News Service) और ह्यूस्टन क्रॉनिकल (Houston Chronicle) शामिल हैं। इन स्रोतों से लगभग मानना है कि दस लाख लोगों से अधिक तक सन्देश पहुंचा है।

ग्वाटेमाला में भी मीडिया कवरेज बहुत अच्छी थी। ग्वाटेमाला राष्ट्रीय अख़बार परीनसा लबर (Prensa Libre) ने जिस का प्रकाशन दैनिक एक लाख तीस हज़ार और चार लाख से अधिक पाठक हैं 24 अक्टूबर को अपने प्रकाशन के पहले पृष्ठ पर नासिर अस्पताल की सुन्दर छवि प्रकाशित की और उद्घाटन के हवाले से रिपोर्ट प्रकाशित की। एक अन्य राष्ट्रीय समाचार पत्र स्तंभ लेखक ने नासीर अस्पताल के बारे में एक लेख लिखा था। एल पेरियोडिको (El Periodico) ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की, राष्ट्रीय समाचार पत्र है। नेशनल टीवी ग्वाटेमाला ने मेरे बारे में बताया और एक अस्पताल की परिचय रिपोर्ट प्रकाशित की। राष्ट्रीय रेडियो चैनल पर रिपोर्टें आती रही। इस तरह एक अनुमान के अनुसार लैटिन अमेरिका के

पृष्ठ 1 का शेष

"हे मेरे ख़ुदा! मैं इस योग्य नहीं कि उस वस्तु पर विजयी हो सकूँ जिसको मैं बुरा समझता हूं। न मैंने उस अच्छाई को प्राप्त किया जिसकी मुझे मनोकामना थी परन्तु अन्य लोग अपने बदले को अपने हाथ में रखते हैं पर मैं नहीं। मेरी श्रेष्ठता कर्म में है। मुझ से अधिक दयनीय अवस्था में कोई व्यक्ति नहीं। हे ख़ुदा जो सर्वश्रेष्ठ है मेरे पाप क्षमा कर, हे ख़ुदा ऐसा न कर कि मैं अपने शत्रुओं के लिए अभियोग का कारण बनूँ, न मुझे अपने मित्रों की दृष्टि में तुच्छ ठहरा। ऐसा न हो कि मेरा संयम मुझे मुसीबतों में डाल दे। ऐसा न कर कि यही संसार मेरी श्रेष्ठतम प्रसन्नता का स्थान या मेरा परम लक्ष्य हो। ऐसे व्यक्ति को मेरे ऊपर हावी न कर जो मुझ पर दया न करे। हे मेरे ख़ुदा जो अत्यन्त दयालु है अपनी दया के उपलक्ष्य ऐसा ही कर। तू जो उन सब पर दया करता है जो तेरी दया के पात्र हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 75 से 77)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

विभिन्न देशों के प्रिंट मीडिया और विभिन्न अखबारों और टेलीविजन चैनलों के माध्यम से लगभग बत्तीस लाख लोगों तक नासिर अस्पताल के उद्घाटन की ख़बर के हवाले से इस्लाम का संदेश पहुंचा। इसके इलावा, लाखों लोग तक सोशल मीडिया ट्विटर, InstaGram और YouTube द्वारा इस का समाचार पहुंचा। और अल्लाह तआला की कृपा से, यह सफर बहुत बरकतों वाला हुआ। अल्लाह तआला इस के भविष्य में अच्छे परिणाम पैदा करे।

नमाज़ों के बाद मैं एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा जो आदरणीय सवाडोगो इस्माईल (Sawadogo Ismail) साहिब का है जो बुर्किना फासो के थे। 14 नवम्बर को फज्र की नमाज़ के लिए घर से निकले रास्ते में दिल का दौरा पढ़ने का कारण गिर गए। निकट के हस्पताल लाया गया। परन्तु ठीक न हो सके। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप का जन्म 1964 ई में हुआ था। 1994 में, उन्होंने अहमदियत स्वीकार की थी और हमेशा उन की कोशिश होती थी कि मिशन हाउस के निकट रहें। जब मिशन हाउस बदल दिया गया, नए स्थान पर हमारा मिशन हाउस चला गया, इसके पास, उन्होंने किराए का घर लिया। हमेशा यह कोशिश होती थी कि अज़ान देने के लिए मस्जिद में आते थे। सालाना जलसा में लोगों को तहज्जुद में लोगों को जागृत करने के लिए तैय्यार रहते थे। आज़ान बहुत अच्छी आवाज़ में देते थे, इसी कारण से कुछ लोगों उन्हें "सय्यदना बिलाल" कहा करते थे। हर साल रमज़ान में एतकाफ बैठते थे। नमाज़ों के बहुत ही पाबन्द और ध्यान दिलाने वाले थे। फज्र की नमाज़ से पहले आकर वहां जमाअत का लड़कों का होस्टल है, लड़कों को नमाज़ के लिए उठाते थे। आज़ान देते और मस्जिद की सफाई हमेशा किया करते थे। जब लाहौर में मस्जिदों पर हमला हुआ और शहादतों के बारे में सुना, तो उन पर बहुत प्रभाव पड़ा। और बहुत अधिक रोए और बार-बार इच्छा प्रकट करते रहे कि वे इन शहीदों में शामिल हों। जमाअत के कामों में सब से आगे रहते थे। 2004 ई में जब मैं वहाँ दौरे पर गया था तो वहां भी सुरक्षा ड्यूटी में हमेशा सब से आगे रहते थे और एक बार वहाँ एक समारोह के दौरान जब मैं भाषण कर रहा था तो ड्यूटी देते हुए बेहोश होकर गिर भी पड़े थे। शायद खाया या पीया कुछ न था या सीधे खड़े रहे बहरहाल इसी कारण से और हमेशा ख़त लिखा करते थे कि मैं वही हूं जो गिरा था। बहुत ईमानदारी और ख़िलाफत से बहुत इश्क़ करने वाले थे तथा सच्चे आशिक़ थे। पेशे के अनुसार, वह वन विभाग में सुरक्षा गार्ड थे। उनकी तदफीन के समय केंद्रीय मेयर द्वारा वन विभाग के कमांडिंग अफसर ने बहुत अच्छे रंग में उनकी सेवाओं को सबके सामने पेश किया कि इस्माईल विश्वास योग्य निष्ठावान और ईमानदार और हँसमुख व्यक्ति था। अपने कर्तव्यों को बहुत उत्कृष्ट तरीके पर अदा करते थे। अल्लाह तआला के फज़्ल से मूसी थे।

पीछे रहने वालों में पहली पत्नी से एक बेटा और एक बेटी हैं, जबकि दूसरी पत्नी से एक दो माह की बेटी यादगार छोड़ी है। अल्लाह तआला मरहूम के स्तरों को बढ़ाता रहे क्षमा का व्यवहार करे और इन बच्चों को अपनी सुरक्षा में रखे।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

ख़ुत्बः जुमअः

एक हदीस कुदसी है कि अल्लाह तआला ने बदर वालों से फरमाया जो चाहो करो, मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है।

आज्ञापालन तथा श्रद्धा तथा वफा के पुतले आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबा।

हज़रत सनान इब्न अबी सनान, हज़रत महजअ, आमिर बिन मख़लद, हज़रत हातिब बिन अम्रो इब्न अब्दे कैस अब्द शम्स, हज़रत अबू ख़ज़ीमा बिन औस, हज़रत तमीम मौला ख़राश, हज़रत मुंज़िर बिन कदामः, हज़रत हारिस बिन हातिब, हज़रत सअलबः बिन ज़ैद, हज़रत अकबः बिन वहब, हज़रत हबीब बिन असवद हज़रत असीमहः अंसारी, हज़रत राफे बिन हारिस, हज़रत रख़ीलह बिन सअलबः अंसारी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला बिन रयाब, हज़रत साबित बिन अकरम बिन सअलबः, हज़रत सलमा बन सलामह, हज़रत जबर बिन अतीक़, हज़रत साबित बिन सअलबः, हज़रत सोहेल बिन वहब, हज़रत तुफ़ैल बिन हारिस, हज़रत अबु सलीत असीरहः बिन अमर, हज़रत सअलबः बिन हातिब अन्सारी, हज़रत सअद बिन उसमान बिन ख़ुलदहः अंसारी, हज़रत आमिर इब्न उमय्या, हज़रत अम्रो इब्न अबी सरह, हज़रत असमा बिन हुसैन, हज़रत ख़लीफा बिन अदी, हज़रत मआज़ बिन माइस, हज़रत सअद इब्न शहली की मुबारक सीरत का वर्णन।

अल्लाह तआला इन सहाबा के स्तर ऊंचा करता चला जाए, और हमें भी नेकियां करने और कुरबानियां करने और श्रद्धा तथा ईमानदारी के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करने की तौफीक़ प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 नवम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

आज से फिर मैं बदरी सहाबा का ज़िक्र पुनरारंभ करूंगा। पहले जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत सिनान बिन अबी सिनान जो बनो असद कबीला से थे और बनो अब्दे श्मस के सहयोगी थे। जंग बद्र में आपने भाग लिया। जंग उहद और जंग ख़दक़ और हुदैबिया सहित जितनी लड़ाई भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमको पेश आईं उन सभी में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमरकाब थे। बैअत रिज़वान में पहले किस ने बैअत की इस संबंधित मतभेद पाया जाता है। कुछ के निकट हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने बैअत की और कुछ के निकट हज़रत सलमा अलअकोअ का नाम वर्णन करते हैं लेकिन वाकदी के निकट हज़रत सिनान बिन अबी सिनान ने सब से पहले बैअत की। और कुछ के निकट हज़रत सिनान के पिता ने पहले बैअत की सआदत हासिल की। बहरहाल तारीख़ में बयान हुआ है कि बैअत रिज़वान में जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों की बैअत लेनी शुरू की तो हज़रत सिनान रज़ियल्लाहो अन्हो ने भी हाथ बढ़ाया कि मेरी बैअत लें। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किस बात पर बैअत करते हो। हज़रत सिनान रज़ियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया कि जो आपके दिल में है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे दिल में क्या है? तुम्हें पता है? सहाबा पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत का भी प्रभाव था तो उन्होंने अर्ज़ किया कि जीत प्राप्त करना या शहादत पाना। इस पर दूसरे लोगों ने भी कहना शुरू कर दिया कि हम भी इसी बात पर बैअत करते हैं जिस पर हज़रत सिनान रज़ियल्लाहो अन्हो बैअत करते हैं।

(रोज़ल अनफ, जिल्द 4, पृष्ठ 62, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत) (सीरतुल हलबिया, जिल्द 3, पृष्ठ 26, अध्याय ज़िक्र मुग़ाज़िया, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2002 ई) (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 69, सिनान बिन अबी सिनान वमन हल्फ़ाय बनी अब्दुल शम्स, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाबः, जिल्द 3, पृष्ठ 561, सिनान बिन अबी सिनान मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत सिनान रज़ियल्लाहो अन्हो कबार मुहाजरीन सहाबी थे। (सीरत इब्ने कसीर, पृष्ठ 280, अस्मा अहले बद्र अक्षर अस्सीन मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2005 ई) (तरीख़ इस्लाम ववफात अलमशाहीर वल अलाम, जिल्द 3, पृष्ठ 371, दारुल कुतुब अल-अरबी बैरूत 1993 से मकतबा अशशामली)

तलीहह बन ख़ौलीद ने दावा नबुव्वत किया तो सबसे पहले हज़रत सिनान ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पत्र लिखकर बताया कि उस समय आप बनो मालिक पर आमिल थे। (तारीख़ अतिब्बरी, जिल्द 3, पृष्ठ 245, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2002 ई)

दूसरे सहाबी जिनका ज़िक्र होगा वे हज़रत महज: जो हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के ग़ुलाम थे। उनके पिता का नाम सालेह था। जो जंग बद्र में यह पहले शहीद हुए थे। उनका संबंध यमन से था। शुरू में कैदी की हालत यह हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के पास लाए गए। इस समय हज़रत उमर रज़ि अल्लाह ने एहसान करते हुए उन्हें आज़ाद कर दिया। आप सब से पहले मुहाजरीन से थे। जंग बद्र में शरीक हुए और आप को यह सम्मान प्राप्त है जैसा कि पहले ज़िक्र किया है कि आप इस्लामी लश्कर के पहले शहीद थे। दो पंक्तियों के बीच में थे कि अचानक एक तीर आप को लगा जिस से आप शहीद हो गए। आमिर बन हज़रमी ने आप को शहीद किया था, उस का तीर लगा था। हज़रत सईद बिन मुसय्यब की रिवायत है कि हज़रत महज: शहीद हुए तो आप की ज़बान पर यह शब्द थे। انا مهجع والی ربی ارجع। मैं मुहज: हूँ और अपने रब की ओर लौटने वाला हूं। हज़रत मुहज: उन लोगों में शामिल थे जिनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई थी कि

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

(सूरह अन्आम 53) और तो उन को न धुतकार जो अपने रब्ब को उस की ख़ुशी चाहते हुए सुबह भी और शाम को भी पुकारते हैं। उनके अलावा इसमें निम्नलिखित सहाबी भी शामिल थे। हज़रत बिलाल, हज़रत सुहैब, हज़रत अम्मार, हज़रत खबाब ,हज़रत अतबह बिन गज़ावन हज़रत औस बिन खोली हज़रत आमिर बन फहीर:।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 299 से 300 महज: बिन सालेह मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाब: जिल्द 5 पृष्ठ 268 महज: मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई) (कनज़ुल उम्माल जिल्द 10 पृष्ठ 408 किताबुल गज़वात हदीस 29985 मुद्रित मुअस्सस अर्रसाला बैरूत 1985 ई)

इसका मतलब यह नहीं है नऊज़ो बिल्लाह कि यह जो आयत नाज़िल हुई थी कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़रीबों को धुतकारते थे। आपका प्यार और सम्मान और आदर और स्नेह गरीबों के लिए अभूतपूर्व और असाधारण था जो हमें हदीसों से भी, इन ग़रीबों के बारे में पता चलता है। इस आयत में वास्तव में तो उन अमीर लोगों और बड़े लोगों को जवाब है जो यह चाहते थे कि हमें अधिक मान और सम्मान दिया जाए उस पर अल्लाह तआला ने यह कहा कि मैंने तो रसूल को यह कह दिया है और यह आदेश है कि ग़रीब लोग जो ज़िक्र तथा इबादत में बढ़े हुए हैं उनका मान और सम्मान अल्लाह तआला के निकट तुम्हारी दौलत और पारिवारिक सम्मान से अधिक है और अल्लाह तआला का रसूल तो वही करता है जो अल्लाह तआला उसे आज्ञा देता है। अत: इस आयत से वास्तव में तो उन अमीरों को यह जवाब दिया गया जिनका विचार यह था

कि उनका स्थान बुलंद है कि अल्लाह तआला के रसूल को तुम्हारे सम्मान और तुम्हारी दौलत की कोई परवाह नहीं है। उसे तो यही लोग प्यारे हैं।

फिर हज़रत आमिर बिन मख़लद एक सहाबी थे। उनकी मां का नाम अमारा बिन्त ख़नसाय था। उनका संबंध ख़ज़रज के कबीला बनो मालिक बिन नज्जार से था। जंग बद्र और जंग उहद में शरीक हुए और उहद के दिन यह शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 375 से 376 आमिर बन मख़लद, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर एक सहाबी थे हज़रत हातिब बिन अम्रो बिन अब्दुल शम्स। अबू हातिब उनका उपनाम था। उनका संबंध कबीला बनू आमिर बिन लूई से था। उनकी माँ अस्मा बिन्त हारिस बिन नोफल थीं जो कबीला अशजअ से थीं। हज़रत सुहैल बिन अम्रो, हज़रत सलीत बिन अम्रो और हज़रत सुकरन बिन अम्रो आपके भाई थे। हज़रत हातिब बिन अम्रो की औलाद में अम्रो बिन हातिब थे। उनकी माँ रैत: बिन्त अलकमह थीं। (असदुल ग़ाब:, जिल्द 1, पृष्ठ 662, हातिब बिन अम्रो मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 309, हातिब बिन अम्रो, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अरकम में तशरीफ़ आवरी से पहले आप हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह की तब्लीग़ से इस्लाम लाए थे। हब्शा की तरफ दो बार हिजरत की और एक रिवायत के अनुसार हिजरत ओली में पहले जो व्यक्ति देश हब्शा में आए वह हज़रत हत्ब: बिन अम्रो बिन अब्दुल शम्स थे। जब आप ने मक्का से मदीना हिजरत की तो हज़रत रफिह बिन अब्दुल मुनज़िर जो हज़रत अबू लबाबह बिन अब्दुल मुनज़र के भाई थे उनके घर में आप उतरे। जंगे बदर में अपने भाई हज़रत सलीत बिन अम्रो के साथ शरीक हुए थे और जंग उहद में भी शरीक हुए थे।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 309, हत्ब: बिन अम्रो, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई), (सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 117 से 119, मुद्रित दार इब्ने हज़्म बैरूत 2009 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हज़रत सौदा बिन्त ज़मअ: की शादी हज़रत सलीत बिन अम्रो ने करवाई और कुछ के निकट हज़रत अबू हातिब: बिन अम्रो ने शादी करवाई और उस समय मेहर जो रखा गया था वह चार सौ दिरहम था।

इस शादी का विवरण तब्कातुल कुबरा में इस तरह दर्ज है कि हज़रत सौदा के पहले पति हज़रत सुकरान बिन अम्रो जो कि हज़रत हातिब बिन अम्रो के भाई थे उनकी हब्शा से मक्का वापसी पर मक्का में मृत्यु हो गई। जब हज़रत सौदा की इद्दत पूरी हुई तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से शादी का संदेश भिजवाया। हज़रत सौदा ने कहा कि मेरा मामला आपके सुपुर्द है। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपनी क़ौम में कोई पुरुष निर्धारित करें कि वह आप अर्थात हज़रत सौदा की शादी मुझसे करवाए। हज़रत सौदा ने हज़रत हातिब बिन अम्रो को नियुक्त किया। इस तरह हज़रत हातिब ने हज़रत सौदा की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शादी करवाई। हज़रत सौदा हज़रत ख़दीजा के बाद पहली महिला थीं जिस से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शादी की।

(सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 661, अध्याय ज़िक्र अज़वाज सौदा बिन ज़मअ, मुद्रित दार इब्ने हज़्म बैरूत 2009), (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 8, पृष्ठ 42 मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हुदौबिया के स्थान पर होने वाली बैअत रिज़वान में भी वह शामिल थे।

(किताबुल मग़ाज़ी, जिल्द 2, पृष्ठ 92, अध्याय जंग हुदैबह, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2004 ई)

फिर एक सहाबी थे, अबू ख़ुज़ैमा बिन औस। उनकी मां का नाम उमर: बिन्त मसूद था। हज़रत मसूद बिन औस के भाई हैं। हज़रत मसूद बिन औस भी जंग बदर में शामिल हुए। उन्होंने जंग बद्र में, जंग उहद और जंग ख़दक़ समेत सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ भागीदारी की। हज़रत उसमान की ख़िलाफत में उन का निधन हो गया। (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 373, अबू ख़ुज़ैमा बन औस, मसूद बिन औस, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर, एक सहाबी, तमीम मौला ख़राश हैं। हज़रत तमीम हज़ ख़राश के आज़ाद किए हुए गुलाम थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के और हज़रत ख़बाब जो उतबह बिन गज़वान के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे इन दौंने के मध्य भाईचारा स्थापित किया था। जंग बदर और जंग उहद में वह शरीक हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 429, तमीम मौला ख़राश, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फ्रि हज़रत मुंज़िर बिन कदाम: एक सहाबी थे। हज़रत मुनज़िर बिन कदाम: का सम्बन्ध कबीला बनू ग़नम से था। उन्होंने जंग बदर और जंग उहद में भाग लिया। अल्लामा वाकदी के अनुसार उन को बानू कैनकाअ के कैदियों पर निर्धारित किया गया था। (असाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 6, पृष्ठ 172, मुनज़र बिन कदामह, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1995), (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 367, मुनज़र बिन कदामह, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर हारिस बिन हातिब एक बदरी सहाबी थे। उसका उपनाम अबू अब्दुल्लाह है। आपकी मां का नाम उमाम: बिन्त सामित था। अंसार का सम्बन्ध अन्सार कबीला औस से था। वह हज़रत सअलब: बिन्त हातिब के भाई थे। हज़रत हारिस बन हातिब और हज़रत अबु लबाबह बिन अब्दुल मुनज़र आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बदर के लिए जा रहे थे कि रोहा स्थान पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू लबाबह बिन अब्दुल मुनज़र को कबाली बनू उमर बिन औफ का अमीर बना कर मदीना वापस भेज दिया। लेकिन इन दोनों को बदर के सहाबा में जोड़कर ग़नीमत के माल में से हिस्सा दिया। हज़रत हारिस बन हातिब को जंग बद्र, जंग उहद और जंग ख़ंदक़ समेत बैअत रिज़वान में भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। क्योंकि यह तैयार होकर जा रहे थे और उनकी पूरी मंशा थी कि बद्र में शामिल होंगे इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बावजूद इसके कि उन्हें अमीर निर्धारित करके वापस भिजवाया था लेकिन उनका शुमार बद्र में शामिल होने वालों में किया। जंग ख़ैबर में जंग के दौरान एक यहूदी ने किले के ऊपर से तीर मारा जोकि हज़रत हारिस बिन हातिब के सिर पर लगा जिससे आप शहीद हो गए।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 1, पृष्ठ 598, हारिस बन हातिब, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 351, हारिस बन हातिब मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत सअलब: बिन ज़ैद एक सहाबी थे। वह अंसार के बानू ख़ज़रज कबीला से संबंधित हैं। जंगे बदर में शामिल हुए थे। हज़रत साबित बिन अलजिज़ा के पिता थे। हज़रत साबित बनि ज़ैद का उप नाम अल्ज़ज़ा है। अल्जिज़ा आप के मज़बूत दिल और मज़बूत प्रतिबद्धता तथा हिम्मत की वजह से कहा जाता है अर्थात जो मज़बूत तना, पेड़ का तना हो उसे भी अल्जिज़ा कहा जाता है और छत का बीम और शहतीर जो है उसे भी कहा जाता है। बहरहाल बड़े मज़बूत दिल के मालिक थे और मज़बूत प्रतिबद्धता और दृढ़ता के अधिकारी थे इसलिए उनका उपनाम अल्जिज़ा पड़ गया। हज़रत सअलब: बिन ज़ैद के संबंध में कोई रिवायत सुरक्षित नहीं है। (असदुल ग़ाब:, जिल्द 1, पृष्ठ 467, सअलब: बिन ज़ैद, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 428, साबित बिन सअलब:, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई), (Arabic-English Lexicon by Edward विलियम लेन भाग 2 पृष्ठ 3 9 6 librairie du liban 1968)

हज़रत अक्बत्र बिन वहब एक सहाबी थे हज़रत अक्ब: बिन वहब को इब्ने वहब भी कहा जाता है: ये कबीला बानू अब्दुल शम्स बिन अब्दुल मुनाफ के समर्थक थे। जंग बद्र और जंग उहद और जंग ख़दक़ समेत सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे। (असदुल ग़ाब:, जिल्द 4, पृष्ठ 59, अक़बा बन वहब, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 70 अक़बा बन वहब मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

मदीना में यहूद का एक प्रतिनिधिमंडल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए आया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें तब्लीग़ की जिसका उन्होंने खुले तौर पर इनकार किया। उस पर जिन सहाबा ने उन्हें इस खुले इन्कार पर बुरा भला कहा उन में हज़रत अक़बा बिन वहब भी शामिल थे। इसलिए यह घटना ऐसे मिलती है कि एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास नोमान बिन अज़ा, बहरी बिन अम्रो और शाईस बिन

अदि आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे बातचीत की और उन्हें अल्लाह तआला की तरफ बुलाया, इस्लाम की दावत दी। और अज़ाब से उन्हें डराया जिस पर उन्होंने कहा कि हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हमें आप किस बात से डराते हैं? हम अल्लाह तआला के पुत्र और उसके प्रियजन हैं। जिस तरह ईसाई ने कहा। अल्लाह तआला ने उनके बारे में यह आयत वर्णन की।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارٰى نَحْنُ اَبْنَاءُ اللّٰهِ وَاَحِبَّاؤُهٗ ۔ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ
بِذُنُوبِكُمْ ۔ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۔ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ وَلِلّٰهِ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ

(सूरत अल्माइदा आयत 19) और यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह तआला के बेटे हैं और उसके प्रिय हैं। तू कह दे कि तो फिर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों के कारण से सज़ा क्यों देता है नहीं बल्कि तुम उन में से हो जिन को अल्लाह तआला ने पैदा किया केवल इन्सान हो। वह जिसे चाहता है क्षमा करता है जिसे वह चाहता है अज़ाब देता है। और आकाशों और पृथ्वी की संप्रभुता अल्लाह तआला की ही है और उस की भी जो उन दोनों के बीच है और अंत उसी की तरफ लौटकर जाना है।

इब्ने इस्हाक़ के अनुसार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यहूदी गिरोह को इस्लाम स्वीकार करने की दावत दी और उन्हें उसकी तरफ द्वारा प्रोत्साहन दिलाया और ग़ैर अल्लाह के मामले में अल्लाह तआला की सज़ा के बारे में उन्हें डराया तो उन्होंने न केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बल्कि आप की लाई हुई शिक्षा का इनकार किया। इस पर हज़रत मुआज़ बिन जबल, हज़रत साद बिन उबादा और हज़रत अक़बा बिन वहब ने उन्हें कहा, हे यहूद के गिरोह अल्लाह तआला से डरो। अल्लाह तआला की कसम तुम जानते हो कि वह अल्लाह के रसूल हैं। तुम ख़ुद हमारे सामने उनकी बेसत से पहले इसका ज़िक्र किया करते थे और हमारे सामने उनकी विशेषताओं को वर्णन करते थे उस पर राफे बिन हुरेमलह और वहब बन यहोज़ा ने कहा कि हम ने तो तुम्हें यह नहीं कहा। और न अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सालम के बाद कोई किताब उतारी है। और न करनी है और न हज़रत मूसा के बाद कोई बिशारत देने वाला और न ही कोई डराने वाला भेजा है न भेजना है।

(सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 265 से 266, मुद्रित दार इब्ने हज़्म बैरूत 2009 ई)

क्योंकि वे लोग साफ इन्कार करने वाले हो गए और यही अवस्था आज कल के कुछ मुसलमानों की है जो मसीह मौऊद को मानने से इंकार कर रहे हैं। पहले आने का शोर मचाते थे अब कहते हैं कि किसी ने नहीं आना।

फिर एक सहाबी हबीब बिन असवद है। हज़रत हबीब बिन असअद बिन सअद अंसार के कबीला बनू हराम के आजाद किए गए ग़ुलाम थे। आप बद्र और जंग उहद में शामिल हुए थे। उनकी कोई सन्तान नहीं थी। आपका वर्णन ख़बीब के नां से भी मिलता है। (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 429, हबीब बिन असवद, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई), (असाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 18, हबीब बिन असअद, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1995), (असदुल ग़ाब: जिल्द 1 , पृष्ठ 671, हबीब बन असवद, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

फिर, उसैमा अंसारी एक सहाबी थे। हज़रत उसैमा का सम्बन्ध बनू अशजअ के कबीला से थे। बनू ग़नम बिन मलिक बिन नज्जार के सहयोगी था। जंग बद्र और उहद और जंग ख़दक़ और अन्य सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक रहे। आप ने हज़रत मआविया बिन अबी सुफयान के समय में मृत्यु पाई।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 377, उसैमा मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत राफिअ बिन हारिस एक सहाबी थे। उसका नाम राफेअ बिन हारिस बिन सवाद है। उन का सम्बन्ध अंसार के कबीला बनू नजार से था। जंग बद्र और जंग उहद और जंग ख़दक़ समेत सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। हज़रत उसमान के दौरे ख़िलाफत में वफात पाई। हज़रत राफेअ बिन मालिक का एक बेटा हारिस का पुत्र था जिस का नाम हारिस था।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 373, राफे बिन हारिस, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत रुख़ैला बिन सअलब: अंसारी एक बदरी सहाबी थे। उनका नाम विभिन्न तरीकों से भी वर्णित किया गया है। कुछ कहते हैं रुख़ैलह कुछ रुजैलह और रुहैलह आदि। आपके पिता का नाम सअलब: बिन खालिद था। जंग बद्र और जॊग उहद में भाग लिया था। उनका संबंध कबीला ख़ज़रज की एक शाखा बनू बियाज़ह से था और आप जंग सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली के साथ थे।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 2, पृष्ठ 273, रख़ैलह बिन सअलब: जिल्द 1, पृष्ठ 509, जबल बिन सअलब:, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 450, रख़ैलह बिन सअलब:, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर जाबिर इब्न अब्दुल्लाह बिन रआइब एक सहाबी था। हज़रत जाबिर को उन छह लोगों में वर्णित किया जाता है जो अन्सार में से सब से पहले मक्का में इस्लाम आए थे। हज़रत जाबिर बद्र और जंग उहद और जंग ख़दक़ और सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हदीसें भी बयान की हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 431, जाबिर बिन अब्दुल्लाह , मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

बैअत उक़बा ऊला में अंसार में से पहले जो इस्लाम लाए वह यही हैं। अंसार के कुछ लोगों की आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उक़बा ऊला के समय जब मुलाकात हुई तो आप ने पूछा कि तुम किस कबीला से हो इसके बाद उन्होंने पूरे विवरण से अपनी बात समझाई और कबीला बनू नज्जार के छह आदमी थे। असद बिन ज़ुरारह और औफ बिन हारिस बिन रफाह बिन अफरा और राफे बिन मालिक बिन अजलान और कतब: बिन आमिर हदीद: और अक़बा बिन आमिर बिन नाबी बिन ज़ैद और जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन रयाब। ये सभी लोग मुस्लिम बन गए। जब ये लोग मदीना आए तो उन्होंने मदीना वालों को रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्र किया और फिर वहाँ तब्लीग़ की।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 1, पृष्ठ 492, जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन रयाब, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत साबित बिन अकरम बिन सअलब: एक बद्री सहाबी थे। उनका नाम हज़रत साबित बिन अकरम बिन सअलब: बिन अदि बिन अजलान था। अंसार के कबीला अमरो बनू अम्रो बिन औफ के सहयोगी थे। आप बदर सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक रहे।

(अल्इस्तियाब जिल्द 1, पृष्ठ 199, साबित बिन अकरम, मुद्रित दारुल जबल बैरूत 1992 ई)

जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना आए तो आसिम बिन अदि को मस्जिद दी कि वह इसमें अपना घर बनाएं लेकिन असीम ने अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह में इस मस्जिद को घर नहीं बनाऊंगा जिस में अल्लाह तआला जो उतारना था उस को उतारा दिया गया है अलबत्ता आप इसे साबित बिन अकरम दे दें क्योंकि उसके पास कोई घर नहीं है तो आप हज़रत साबित बिन अकरम को यह जगह प्रदान की गई। उनके कोई सन्तान नहीं थी।

(सबलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 5, पृष्ठ 677, ज़िक्र अमर मस्जिद अज़्ज़रार, मुद्रित अल्काहिर: 1992 ई)

शायद यह जगह वह होगी जो मस्जिद का हिस्सा होगी या निकटतम जगह होगी और किसी भी समय में वहाँ नमाज़ें भी पढ़ी जाती होंगी बहरहाल जो अनुवाद करने वालों ने अनुवाद किया है मेरे विचार में वह ठीक नहीं है। कुछ बातों की व्याख्या होती है इसलिए रिसर्च सेल वाले जो यह नोटिस भिजवाते हैं इसे कुछ अनुसंधान कर के सही तरह भेजा करें। केवल स्कूल के बच्चों की तरह अनुवाद न करें।

फिर जंग मौत: में हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह: की शहादत के बाद इस्लामी झंडा हज़रत साबित बिन अकरम ने उठाया और कहा कि ऐ मुसलमानों के गिरोह! अपने में से किसी एक को अपना सरदार निर्धारित कर लो। लोगों ने कहा कि हम आपको अमीर निर्धारित करते हैं। आपने कहा कि मैं इस तरह नहीं कर सकता इस पर लोगों ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को अपना सरदार बना लिया। इब्ने हश्शाम की सीरतुन्नबी में इस का वर्णन है।

(सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 533, मुद्रित दार इब्ने हज़्म बैरूत 2009)

इतिहास में आता है कि जंग मौत: के अवसर पर जब मुसलमानों ने दुश्मन को सेना देखा तो उसकी संख्या और उपकरणों को देख उन्होंने गुमान किया कि लश्कर का कोई मुकाबला नहीं। तो अबू हुरैरा का वर्णन है कि मैंने जंग मौता:

में शरीक था। जब दुश्मन हमारे पास आया तो हमने देखा कि संख्या, हथियारों, घोड़ों और सोने और रेशम आदि में इसका मुकाबला करना किसी के बस में नहीं है। यह देखकर, मेरी आंखें चंधिया गईं। इस पर हज़रत साबित बिन अकरम ने मुझ से कहा कि हे अबु हुरैरा ! तेरी हालत इस तरह दिखती है कि जैसे तूने एक बड़ी सेना देखी है। अबू हुरैरा कहते हैं कि मैंने कहा हाँ। इस पर साबित ने कहा कि तुम हमारे साथ बदर में शामिल नहीं हुए थे वहां भी हमें संख्याओं के कारण जीत नहीं मिली थी।

(सबलुल हुदा वर्ररिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 148, बाब मौतह दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1993 ई)

बल्कि वह तो अल्लाह तआला की कृपा से मिली थी और यहाँ भी यही होगा।

हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की ख़िलाफत में, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद लोगों के मुकाबला में रवाना होते समय अज़ान सुनते तो हमला न करते और अगर आज़ान न सुनते तो हमला कर देते। जब आप उस क़ौम की तरफ पहुंचे जो बुज़ाख़ा स्थान में थी तो आप ने हज़रत उकाशा बिन महसन और हज़रत साबित बिन अरकम को मुख़बिर बना कर भेजा कि दुश्मन की ख़बर लाएं। और वे दोनों घोड़ों पर सवार थे। हज़रत अक्काशा के घोड़े का नाम अल-ज़ारम था, और हज़रत साबिर के घोड़े का नाम का नाम अल-महबर था। हालांकि, उन दोनों को सामना तलैहा और उस के भाई सल्मा के साथ सामना करना पड़ा। ये इन्हीं की तरह मुख़बरी करने के लिए आए हुए थे। आपने लश्कर से आगे आए हुए थे। तलैहा का सामना हज़रत अक्काशा के साथ हुआ और सलमा का हज़रत साबित से। इन दो भाइयों ने दोनों सहाबा को शहीद कर दिया। अबू वाकद लैसी से एक रिवायत है कि हम दो सौ सवार सेना के आगे आगे चल रहे थे और ज़ैद बिन खत्ताब हमारे अमीर थे और साबित और अक्काशा हमारे आगे थे। जब हम उन लोगों के पास से गुज़रे तो हमें यह दृश्य बहुत अप्रिय लगा। (उनके शहीद होने के बाद, जब सेना पीछे से आई)। हज़रत खालिद और बाकी मुस्लिम हमारे पीछे थे। हम कतल होने वालों के पासखड़े रहे ये जो शहीद हुए थे, यहां तक कि हज़रत ख़ालिद भी आए, और उनके आदेश से, हमने साबित तथा अक्काशा को उन के ख़ून मिले हुए कपड़ों में दफन कर दिया।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 355 से 356, साबित बिन अकरम, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

रिवायत में आता है कि जब तुलैह: मुसलमान हुए तो हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने उन से कहा कि मैं तुमसे प्यार नहीं करूँगा, क्योंकि तुम दो मुसलमान हज़रत अक्काशा और हज़रत साबित बिन अकरम के शहीद होने का कारण हो। यह शहीत करने वाले थे जो बाद में मुसलमान हो गए तो उन को हज़रत उमर ने जवाब दिया कि तुम्हारे से मुझ को मुहब्बत नहीं हो सकती क्योंकि तुम दो मुसलमानों को शहीद करने वाले हो। इस पर तुलैहा ने कहा, हे अमीरुल मोमेनीन उन्हें तो अल्लाह तआला मेरे हाथों से सम्मान प्रदान फरमाया है।

(सुनन अल्कुबरा लिल्बहीकी, जिल्द 8, पृष्ठ 580 से 581, हदीस 17631, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

उन की कोई सन्तान नहीं थी। मुहम्मद इब्न उमर का कहना है कि हज़रत साबित को तुलैहा ने बारह हिजरी में बुज़ाख़ा स्थान पर शहीद किया। (अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 355 से 356 साबित बिन अकरम मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत सलमा बिन सलाम: बदरी सहाबी थे। अंसारी थे और कबीला औस के ख़ानदान बनू अशहल से इन का सम्बन्ध था। जब मदीना आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव की ख़बर पहुंची, तो पहले लोगों में से थे जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए थे।

(सौरुस्सहाबा, जिल्द 3, पृष्ठ 391, सलमा बिन सालेह, प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

आप बैअत उक़बा ऊला और सानिया दोनों में शामिल हुए और साथ ही आप को बदर सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ भागीदारी की सआदत हासिल हुई। हज़रत उमर ने आपको अपने ख़िलफात के समय में यमामा का शासक नियुक्त किया।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 2, पृष्ठ 523, सलमा बिन सलाम:, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

उमर बिन क़तादा कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सलमा बन सलामह और हज़रत अबू सबर: बिन अबी रुहम के बीच भाईचारा स्थापित किया लेकिन इब्ने इस्हाक़ के निकट सलमा बिन सलामह और हज़रत ज़ुबैर बिन अल्अवाम के बीच भाईचारा स्थापित हुआ।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 335, सलमा बन सलाम:, मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

आप अपने बचपन की एक घटना ख़ुद वर्णन करते हैं कि एक बार जब मैं छोटी आयु का था कि एक यहूदी आलिम हमारे सामने आ गया और उस ने हमारे सामने क़यामत और हिसाब तथा जन्नत तथा जहन्नुम का वर्णन किया और कहने लगे कि शिर्क करने वाले तथा बुत की पूजा करने वाले जहन्नम में जाएंगे। आपके परिवार के लोग चूंकि मूर्तिपूजक थे इसलिए वे इस तथ्य को नहीं समझ पाए थे कि मृत्यु के बाद लोगों को पुनर्जीवित किया जाएगा। उन्होंने यहूदी विद्वान से पूछा कि क्या मृत्यु के बाद लोगों को पुनर्जीवित किया जाएगा? और आपको अपने कार्यों के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। मरने का बाद के जीवन के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। उसने हाँ कहा। उन्होंने पूछा, उसकी निशानी क्या है? उसने मक्का और यमन की ओर इशारा करते हुए कहा कि इस स्थान से एक नबी आएगा। तो लोगों ने पूछा कि वह कब आएगा तो उस मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा मैं बच्चा था छोटा था मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा कि अगर इस लड़के ने उमर पाई तो यह ज़रूर उस नबी को देखेगा। हज़रत सलमा कहते हैं कि इस घटना के कुछ साल ही बीते थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगमन की हमें सूचना मिली और हम सब ईमान ले आए, यह जो बुतपरस्त थे आग की पूजा करने वाले थे सब ईमान ले आए। कहते हैं उस समय वह यहूदी विद्वान भी ज़िंदा था लेकिन ईर्ष्या के कारण वह ईमान नहीं लाया और हम ने उसे कहा कि तुम हमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगमन की ख़बरें सुनाया करते थे अब ख़ुद ही ईमान नहीं लाए। उस ने कहा कि यह वह नबी नहीं जिस का मैंने वर्णन किया था। और अन्त में वह आदमी इसी तरह कुफ्र की अवस्था में मर गया।

हज़रत उसमान के ज़माना में जब उपद्रवों ने सिर उठाया, तो आप ने एकान्तवास कर लिया और अपने आप को अल्लाह तआला की इबादत के लिए वक्फ कर दिया।

(रहमते दारैन की सौ शैदाई, पृष्ठ 574 से 576, तालिब अलहाश्मी अल्बदर पब्लीकेशनज़ लाहौर 2003 ई)

अर्थात एकान्त वास कर लिया क्योंकि फत्ने उस समय बहुत अधिक बढ़ गए थे। और केवल अल्लाह तआला की इबादत किया करते थे कुछ कहते हैं कि कुछ कहते हैं कि 34 हिदरी में वफात पाई कुछ कहते हैं कि 45 हिजरी में वफात पाई। उन की उमर 74 वर्ष की थी जब वह वफात पाए और मदीना में ही उनकी वफात हुई।

(अल्असाब: फी तमीज़ुस्हाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 125, सलमा बन सलाम: बिन वकश, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2005 ई)

फिर हज़रत जाबिर बिन अतीक़ एक बद्री सहाबी थे। जंग बद्र और सभी जंगों में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ भागीदार थे। मदीना में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु तक वहीं रहे। हज़रत जाबिर बिन अतीक़ की कुन्नियत अब्दुल्लाह थी। औलाद में दो बेटे अतीक और अब्दुल्लाह और एक बेटी उम्मे साबित थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाबिर बिन अतीक़ और ख़बाब बिन अलअरत के बीच भाईचारी स्थापित फ़रमाया। फतेह मक्का के अवसर पर बनू मुआविया बिन मालिक का झंडा आपके पास था। हज़रत जबर बिन अतीक़ की मृत्यु 61 हिजरी में यज़ीद बिन मुआविया की ख़िलाफत में 71 वर्ष की आयु में हुई, दौर में कहना चाहिए ख़िलाफत नहीं थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 357, जाबिर बिन अतीक़, दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 1990 ई)

एक सहाबी का नाम हज़रत साबित बिन सअलब: था। उन्हें साबित बिन जज़अ भी कहा जाता है। सत्तर अंसार के साथ उक़बा सानिया में हाज़िर हुए। जंग बद्र, जंग उहद और जंग ख़दक़, हुदैबिया और ख़ैबर और फतेह मक्का और जंग ताइफ़ में आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। जंग ताइफ़ मे शहीद हुए। हज़रत साबित अपने पिता हज़रत सअलब: के साथ जंग बद्र में शामिल हुए थे। (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 428 से 429, साबित बिन सअलब:, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई), (असदुल ग़ाब:, जिल्द 1, पृष्ठ 324, सअलब: बिन हारिस, दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत

2003 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत सोहेल बिन वहब हैं। उनका नाम हज़रत सोहेल बिन वहब बिन राबीया बिन अम्रो बिन आमिर क़ुरैशी था। उनकी मां का नाम वअद था लेकिन वह बीज़ाय के नाम से मशहूर थीं। इसलिए आप भी इब्ने बीज़ाय के नाम से मशहूर हुए। अत: पुस्तकों में आपका नाम सुहैल बिन बीज़ाय भी मिलता है। उनका संबंध क़बीला क़ुरैश के परिवार बनू फ़ख़र से था। (अलअसाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 162, सहल बिन बीज़ाय अलकर्शी, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2005 ई), (असदुल ग़ाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 344, सअलब: बिन हारिस, दारुल अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई)

प्रारंभिक ज़माना में यह इस्लाम लाए। इस्लाम लाने के बाद हब्शा की ओर हिजरत कर गए। वहाँ लम्बे समय तक रहे। जब इस्लाम की स्पष्ट तब्लीग़ होने ने लगी तो मक्का लौट गए और फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद मदीना गए। (सैरुस्सहाब: जिल्द 2, पृष्ठ 577, सुहैल बिन बैज़ाय, दारुल इशाअत कराची)

हज़रत सोहेल के साथ उनके दूसरे भाई हज़रत सफवान बिन बीज़ाय भी जंग बद्र में शामिल हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद, जिल्द 3, पृष्ठ 318, सफवान बिन बीज़ाय, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

जब आप जंग बद्र में शामिल हुए तब आपकी उम्र 34 साल थी। जंग उहद और जंग ख़दक़ और सभी जंगों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। उनके तीसरे भाई सहैल मुशरिकीन की तरफ से जंग बद्र में शामिल हुए। अल्लामा इब्ने हजर असकलानी लिखते हैं कि सुहैल मक्का में इस्लाम लाए लेकिन किसी से अपना मुसलमान होना प्रकट नहीं किया। क़ुरैश उन्हें बद्र में साथ ले गए और फिर वह गिरफ्तार हुए तो इब्ने मसूद ने उनके बारे में गवाही दी कि मैं उन्हें मक्का में नमाज़ पढ़ते देखा है। इस पर वह आज़ाद कर दिए गए फिर मदीना में उनकी मृत्यु हुई और आप और हज़रत सोहेल का जनाज़ा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में पढ़ाया।

हज़रत सोहेल बिन बीज़ाय रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग तबूक के सफर में उन्हें सवारी पर पीछे बिठाया हुआ था। वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ोर से कहा, हे सोहेल! और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार ऐसा कहा तो हर बार हज़रत सोहेल ने अर्ज़ किया लब्बैक या रसूलल्लाह। यहां तक कि लोगों ने भी जान लिया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इन से अभिप्राय है। उस पर जो लोग आगे थे वह आप की तरफ लपके और जो पीछे थे वे भी आप के निकट हो गए। यह भी लोगों को बुलाने का, आकर्षित करने का तरीका था। जब लोग इकट्ठे हो गए तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने गवाही दी कि अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीं और वह अकेला है और उसका कोई साझी नहीं तो ऐसे व्यक्ति पर अल्लाह तआला आग हराम कर देगा।

(अलअसाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 162 से 163, सहल बिन बीज़ाय अल्कर्शी, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1995), (अलअसाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 176, सुहैल बिन अस्समत, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1995 ई), (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद, जिल्द 3, पृष्ठ 317, सुहैल इब्ने बीज़ाय, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

अब यह इतिहास की किताब है और यह मुसलमान पढ़ते हैं यह मुसलमान होने की भी एक परिभाषा है लेकिन इन के कर्म इसके ख़िलाफ हैं और इस बात पर जो उनके फत्वे हैं वे भी इन बातों के ख़िलाफ हैं।

हज़रत अनस बताते हैं कि हमारे पास कोई शराब न होती थी सिवाय तुम्हारी फज़ीख अर्थात खजूर की शराब के। यही वह शराब थी जिसे तुम फज़ीख़ कहते हो। कहते हैं मैं एक बार खड़ा अबू तल्हा और अमुक अमुक को शराब पिला रहा था कि इतने में एक व्यक्ति आया और उसने कहा क्या तुम्हें खबर पहुंची है? कहने लगा क्या ख़बर? उसने कहा कि शराब हराम की गई है। वे लोग जिन्हें यह शराब पिला रहे थे हज़रत अनस को कहने लगे कि अनस यह मटके उंडेल दो। कहते थे तो उन्होंने उस व्यक्ति की ख़बर देने के बाद शराब के बारे में पूछा और न कभी उस के बारे में दोबारा पीछा।

(सही अल्बख़ारी किताबुल तफ़सीर, अध्याय हदीस 4617)

एक हुक्म आया और उसके बाद ऐसी आज्ञाकारिता थी कि फिर दोबारा फिर शराब का ज़िक्र भी नहीं हुआ। एक दूसरी हदीस से प्रमाणित है कि हज़रत अबू तरहा के साथ हज़रत अबू दुजानह और हज़रत सुहैल बिन बीज़ाय थे जो उस समय शराब पी रहे थे।

(सही अल-बुख़ारी, किताबुल अशरब:, हदीस 5600)

जंग तबूक से वापसी पर 9 हिजरी में उनकी वफात हुई और उनके अंतिम संस्कार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी में पढ़ाई और वफात के समय उनकी कोई औलाद नहीं थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 317, सुहैल इब्न बैज़ाय, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अबाद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि हज़रत आयशा ने इरशाद फ़रमाया कि हज़रत सअद बिन अबी वक़ास का जनाज़ा मस्जिद से गुज़ारा जाए यानी कि मस्जिद में लाया जाए ताकि वह भी उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ लें। लोगों ने हज़रत आयशा से इस बात को अलग तरीके से जाना कि वह अजीब बात कर रही हैं, तो हज़रत आयशा ने कहा कि लोग कितनी जिल्दी भूल जाते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सुहैल बिन बैज़ाय की नमाज़ जनाज़ा मस्जिद में ही पढ़ाई थी। (अनुवादक सही मुस्लिम किताबुल जनाईज़, हदीस 1603, जिल्द 4, पृष्ठ 135 नूर फाउंडेशन)

उन्होंने सोचा कि खुली जगह में पढ़ना चाहिए, तो उस का सुधार हज़रत आयशा ने फरमाया कि मस्जिद में नमाज़ जनाज़ा पढ़ी जा सकती है।

हज़रत तुफैल बिन हारिस एक सहाबी थे। हज़रत तुफ़ैल अपने भाई हज़रत उबैदा और हज़रत हुसैन के साथ जंग बद्र, जंग उहद, जंग ख़दक़ और सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक रहे।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 466, तुफ़ैल बिन हारिस, दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तुफैल बिन हारिस का भाईचारा हज़रत मुन्ज़र बिन मुहम्मद और कुछ रिवायतओं के अनुसार हज़रत सुफियान बिन नसर से स्थापित फ़रमाया। हज़रत तुफैल की वफात सत्तर वर्ष की आयु में 32 हिजरी को हुई थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, जिल्द 3, पृष्ठ 38, अत्तुफैल बिन हारिस, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर, एक साहिब अबू तालित उसैर: बिन अम्रो हैं। उसैर: बिन अमरो इन का नाम था और उपनाम अबू सलीत था और अबू सलीत के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। उनके पिता अमरो भी अबू ख़ारजा उपनाम से प्रसिद्ध हैं। बदर तथा अन्य जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे।

(असहाबे बद्र क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरपूरी, पृष्ठ 131, मकतबा इस्लामिया 2015 ई)

आप ख़ज़रज की शाखा अदी बिन नज्जार से संबंधित थे। उनके पिता अबू ख़ारजा अम्रो बिन क़ैस भी साहाबी थे।

(सहाबा कराम का इन्साइक्लोपीडिया डॉक्टर ज़ुल्फिक़ार काज़िम, पृष्ठ 508, अबू सलीत उसैर बिन अम्रो, बैयतुल उलूम लाहौर)

जंग बदर में शामिल हुए। आप के बेटे अब्दुल्लाह से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गधों का मांस खाने से मना किया गया था और उस समय देगें चढ़ी हुई थीं जिनमें गधे का मांस पक रहा था तो हम लोगों ने उन देगों के उलट दिया था।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 5, पृष्ठ 156, अबू सलीत अल-अंसारी, दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीई बैरूत 2003 ई)

हज़रत सअलब: बिन हातिब अन्सारी एक सहाबी थे। उन का सम्बन्ध बनी अम्रो बिन औफ से था जंग बदर तथा उहद में यह शामिल हुए थे।

(असहाबे बद्र क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरपूरी, पृष्ठ 136, मकतबा इस्लामिया 2015 ई)

जैसा कि बताया गया कि कबीला और की शाख़ा बनी अम्रो बिन औफ से सम्बन्ध था। जंग बदर तथा कुछ अन्य जंगों में भी इन के शरीक होने की रिवायत मिलती है।

(सहाबा कराम का इन्साइक्लोपीडिया डॉक्टर ज़ुल्फिक़ार काज़िम, पृष्ठ 450, अबू सलीत उसैर बिन अम्रो, बैयतुल उलूम लाहौर)

हज़रत उमामह बाहली वर्णन करते हैं कि सअलब: बन हातिब अंसारी ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर यह अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल अल्लाह तआला से दुआ करें कि वह मुझे माल प्रदान करे। आपने फरमाया, अफसोस की बात है, बहुत थोड़े हैं जो शुक्र करते हैं और धन को संभालने की ताकत नहीं रखते हैं। दुआ नहीं की कुछ देर के बाद वह फिर आए और कहा कि दुआ करें कि मुझे माल अता हो जाए। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तेरे लिए क्या मेरा नमूना काफी नहीं है, जो धन की इच्छा कर रहे हो? आपने फ़रमाया कि उस हस्ती की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है कि यदि मैं पहाड़ को कहूँ कि वह मेरे लिए सोने और चांदी का बन जाए तो ऐसा ही हो लेकिन आपने कहा ऐसा नहीं करता। माल से अधिक प्रेम नहीं रखना चाहिए। फिर तीसरी बार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और फिर इसी तरह अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने जिस ने आप को सच्चाई के साथ भेजा है दुआ करें कि मुझे माल अता हो। इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की कि सअलब: को माल अता कर दे। रावी बताते हैं कि उनकी कुछ बकरियां थीं और इसके बाद इसमें इतनी बरकत पड़ी और वह इस तरह बढ़ी जिस तरह कीड़े मकोड़े बढ़ते हैं और फिर यह हुआ कि उन्हें संभालने के लिए उन्होंने ज़ुहर तथा अस्र की नमाज़ पर मस्जिद मैं आना छोड़ दिया और इसे फिर वहां पढ़ने लगे। और अधिक बढ़ गईं तो जुम्अ: की नमाज़ में भी आना छोड़ दिया। जुम्अ: पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों की ख़ैरियत पूछा करते थे तो एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सअलब: के बारे में पूछा तो लोगों ने कहा कि उसके पास बकरियों का इतना बड़ा झुंड है कि पूरी घाटी भरी हुई है इसलिए इन इसे संभालने में समय लगता है, वह नहीं आते हैं। बहरहाल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर बहुत खेद व्यक्त किया। तीन बार पछतावा व्यक्त किया तब जब जकात की आयतें नाज़िल हुईं, तो आपने दो लोगों को ज़कात लेने के लिए भेजा। ये लोग सअलब: के पास गए तो उन्होंने कुछ बहाना किया और ज़कात नहीं दी। उन्होंने कहा अच्छा मैं सोचता हूं तुम लोग बाकी स्थानों पर ज़कात लेने जा रहे हो वहां से होकर वापस आओ। यह लोग दूसरे स्थानों पर गए और एक और जगह चले गए जहां एक व्यक्ति ने अपने सबसे अच्छे ऊंटों की ज़कात दी। उन्होंने कहा कि हमने सर्वश्रेष्ठ तो नहीं मांगा था उन्होंने कहा, "हम अपनी ख़ुशी दे रहे हैं।" बहरहाल यह एक लंबा किस्सा है और उन्होंने ज़कात नहीं दी और ज़कात एकत्रित करने वाले जो लोग गए थे उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आकर जब यह रिपोर्ट दी तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तब ये आयतें उतरीं कि

وَمِنْهُمْ مَّنْ عَاهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ اور پھر یہ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ

(अत्तौब: 75-77) सूर: तौब: 45 से 77 तक आयतें। तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उस समय सअलब: का एक रिश्तेदार बैठा हुआ था। यह सुनने के बाद, वह सअलब: के पास गया और कहा, हे सअलभ: तुझ पर अफसोस अल्लाह तआला ने तेरे बारे में अमुक अमुक आयतें नाज़िल की हैं। सअलब: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में जाकर निवेदन करने लगा कि मुझे से ज़कात स्वीकार की जाए। आपने फरमाया कि अब अल्लाह तआला ने मुझे तुझ से वसूल करने का मना कर दिया है। अत: वापस असफल रहा। जब अबू बकर के ज़माना में वह ज़कात ले कर आए तो हज़रत अबू बकर ने भी स्वीकार नहीं की। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के ज़माने में आए उन्होंने भी स्वीकार नहीं की कि जिस बात को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वीकार नहीं किया कैसे स्वीकार कर सकता हूँ। फिर हज़रत उस्मान जब ख़लीफा बने तो उनके पास आकर कहने लगे मेरी ज़कात स्वीकार करें तो यह स्वीकार नहीं की गई और हज़रत उस्मान के ज़माने में ही उनकी मृत्यु हो गई।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 1 पृष्ठ 325-326, सअलब: बन हातिब , दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई)

अब यह जो घटना है एक तरफ तो बदरी सहाबी के बारे में है कि वे जन्नत में ले जाने वाले हैं। दूसरी ओर, यह ज़कात स्वीकार नहीं करने के बारे में एक लंबी रिवायत है। मेरे दिल में यह विचार पैदा हुआ था इसे सुन कर पढ़ कर, आप लोगों के दिलों में भी हुआ होगा कि यह किस तरह हो सकता है? ऐसा लगता है कि यह रिवायत ग़लत है किसी और के बारे में है। अत: अल्लाम: इब्न हजर असकलानी ने इस घटना का ज़िक्र किया है। उन्होंने भी इस पर अपनी राय ज़ाहिर करते हुए लिखा है कि अगर यह सही साबित हो जाए कि किसी सहाबी से ज़कात लेने का और न लेने की यह घटना ऐसे ही हुई थी, तो इस किस्सा वाले व्यक्ति के बारे में मेरे विचार में इसे हज़रत सअलब: के बारे में वर्णन करना उचित नहीं होगा तो फिर इस किस्सा वाले आदमी के बारे में मेरे विचार में इसे हज़रत सअलब: के बारे में वर्णन करना उचित नहीं होगा क्योंकि आप बद्री सहाबी थे और बद्री सहाबा के बारे में तो अल्लाह तआला ने स्पष्ट माफी की घोषणा की है और उनमें मुनाफकत (पाखंड) और किसी प्रकार की कमज़ोरी नहीं हो सकती थी। अल्लामा इब्ने हजर असकलानी यह लिखते हैं कि इब्ने कल्ब के कथन से यह बात सुनिश्चित हो जाती है कि बद्री सहाबी जंग उहद में शहीद हो गए जिस का समर्थन इस से भी होता है कि इब्ने मरदूदिया ने अतिया के प्रमाण से बहवाला इब्ने अब्बास इस आयत के बारे में अपनी तफ़सरी में वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति था जिसे सअलब: बिन अबी हातिब कहा जाता था वह अंसार में से था और एक मज्लिस में आकर कहने लगा कि अगर अल्लाह तआला हमें अपने फज़्ल से से नवाज़े फिर, यह पूरा लंबा किस्सा जो वर्णन किया जाता है। यह सअलब: बिन अबी हतिब है और बद्री सहाबी के बारे में सब सहमत है कि वह सअलब: बिन हातिब हैं और यह रिवायत प्रमाण तक पहुंची कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जो लोग बद्र और हुदैबिया में शरीक थे उनमें से कोई मुसलमान जहन्नम में नहीं जाएंगा। इसी तरह वह एक हदीस क़ुदसी है कि अल्लाह तआला ने अहले बदर से फरमाया जो चाहे करो मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया तो यह लिखते हैं जिस का यह स्थान हो उसे अल्लाह तआला दिल में मुनाफकत का बदला किस प्रकार देगा? दिल में अगर मुनाफकत है तो यह नहीं हो सकता जन्नत में जाने का बदला मिले। फिर लिखते हैं और जो कुछ नाज़िल हुआ उस के बारे में कैसे नाज़िल हो सकते है जिस के दिल में निफाक़ हो अत: यह बात स्पष्ट हो गई कि वह इस आदमी के इलावा हैं।

(अल्असाब: फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 1, पृष्ठ 516 से 517, सअलब: बिन हातिब, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2005 ई)

अर्थात हज़रत सअलब: जो थे यह अन्य थे। यह पहले शहीद हो गए थे। और जिस का वर्णन है वह सअलब: बिन हातिब है. अब नाम मिलते जुलते हैं इस कारण यह भूल हो गी। इसलिए सअलब: बिन हातबि और सअलब: बिन अबी हातिब दो विभिन्न आदमी हैं अत: यह ग़लत फहमी किसी बदरी सहाबी के बारे में नहीं हो सकती कि उन्होंने कोई इस प्रकार की हरकत की होगी। अल्लाह तआला जज़ा दा अल्लामा इब्ने हज्र असकलानी को उन्होंने भी इस मस्ला कोबहुत खोल कर वर्णन कर दिया और बदरी सहाबी पर जो इल्ज़ाम लग रहा था उन की इस तारीख़ी रिवायत से भी उन की बरीयत प्रमाणित हो गई है।

फिर एक सहाबी हज़रत सअद बिन उसमान बिन ख़लद: अन्सारी हैं। कुछ के निकट उन का नाम सईद बिन उसमान है। जंग बद्र में शामिल हुए। उन व्यक्तियों में से हैं जिनके पैर जंगे उहद में उखड़ गए थे और फिर अल्लाह तआला ने उन सभी की माफी को क़ुरआन में नामिज़ल किया। आप हज़रत उक्बा के भाई थे। एक बार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर्ह के स्थान पर बेयर इहकाब पर तशरीफ़ लाए जो इन दिनों आप की यानी कि उन सहाबी का स्वामित्व था जहां आप अपने बेटे अबादा को छोड़ गए थे ताकि वे लोगों को पानी पिलाएँ। हज़रत अबादा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचान नहीं सके। जो छोटे बेटे थे। बाद में जब हज़रत सअद आए तो हज़रत अबदा ने आने वाले व्यक्ति का हुलिया वर्णन किया तो हज़रत सअद ने कहा कि यह तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे जिन्हें तुम पहचान न सके। जाओ जा कर मिलो उन से शीघ्र जा कर मिलो, वापस जाओ। इसलिए वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके सिर पर हाथ फेर कर दुआ दी। हज़रत सअद बिन उसमान की आयु 80 वर्ष की थी जब उन की वफात हुई।

(सहाबी बद्र से काजी मोहम्मद सुलेमान मनदरिपोरी, पृष्ठ 148, साद बिन उस्मान, मकतबा इस्लामिया 2015), (असदुल ग़ाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 263, सईद बिन उसमान, दारुल फिक्र ालनशर और ालतवज़ीबैरूत 2003 ई), (अल्असाब: एफ़

(असहाबे बद्र क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरपूरी, पृष्ठ 148, सअद बिन उस्मान, मकतबा इस्लामिया 2015 ई), (असदुल ग़ाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 263, सईद बिन उसमान, दारुल फिक्र अन्शर वत्तौज़ीआ बैरूत 2003 ई), (अल्असाब:

फी तमीज़िस्सहाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 58, सअसाद बिन उस्मान बिन ख़लदह:, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2005 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत आमिर बन उमय्या हैं। हज़रत हश्शाम बिन आमिर के पिता थे। बदर में शामिल थे और उहद में शहीद हुए। कबीला बनू आदि बिन नज्जार में से थे।

(अत्तबकातुल कुबरा, जिल्द 3, पृष्ठ 389, आमिर बन उमय्या मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत हश्शाम बिन आमिर से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उहद के शहीदों को दफ़नाने के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया कि बड़ी कब्र खोदो और दो या तीन को एक कब्र में उतार दो। फरमाया कि जिस को कुरआन अधिक आता हो उसे पहले उतारो। हज़रत हश्शाम बिन आमिर वर्णन करते हैं कि मेरे पिता आमिर बन उमय्या को दो आदमियों से पहले कब्र में उतारा गया।

(सुनन अत्तिरमज़ी, बाब अब्वीबुल फज़ायल हदीस 1713)

हज़रत आमिर के बेटे हश्शाम बिन आमिर एक बार हज़रत आयशा के पास गए तो उन्होंने कहा कि आमिर क्या खूब व्यक्ति था। लेकिन आप की फिर नस्ल नहीं चली।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 12, आमिर बिन उमय्या, दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई)

हज़रत अम्रो बिन अबी सरह एक सहाबी थे और वाकदी ने उनका नाम मुअम्मर बिन अबी सरह वर्णन किया है। कबीला बनू हारिस बिन फहर में से थे। अबू सईद उन का उपनाम था। तीस हिजरी को मदीना में हज़रत उसमान के दौर में उनकी मृत्यु हुई। उनके भाई हज़रत वहब बिन अबी सरह मुहाजरीन हब्शा में से थे। दोनों भाई बद्र की जंग में शामिल हुए। जंग उहद और जंग ख़ंदक़ और अन्य जंगों भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। उनकी नस्ल कोई भी नहीं चली।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 3, पृष्ठ 724 से 725, अम्रो बिन अबी सरह, दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीई बैरूत 2003 ई)

मक्का से मदीना हिजरत के समय हज़रत कुलसुम बिन हदम के मकान पर आकर रुके।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद, जिल्द 3, पृष्ठ 318, मुअम्मर बिन अबी सरह, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत असमह बिन हुसैन एक सहाबी थे जो कबीला बनू औफ बिन ख़ज़रज से थे। उनके भाई हुबैल बिन वबरह: अपने दादा वबरत की तरफ सम्बन्धित हैं। यह और उनके भाई बद्र में शामिल हुए थे। कुछ ने आप के बदर में शामिल होने से मतभेद किया है।

(असहाबे बद्र क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरपूरी, पृष्ठ 177, सअद बिन उस्मान, मकतबा इस्लामिया 2015 ई),

लेकिन बहरहाल कुछ ने लिखा है कि शामिल हुए।

हज़रत ख़लीफा बिन अदी। उनके नामों के बीच भी मतभेद है। उनका नाम कुछ ने ख़लीफा बिन अद्दी लिखा और कुछ ने ख़लीफा बिन आदि। जंग बद्र और जंग उहद दोनों में शरीक थे। ख़लीफा बन आदि बिन अम्रो बिन मालिक बिन अम्रो बिन मलिक बिन अली बिन बियाज़ह बद्र के सहाबियों में से थे।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 1, पृष्ठ 710 से 711, ख़लीफा बिन अदी, दारुल फिक्र अन्नशर और वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई), (असहाबे बद्र क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान मन्सूरपूरी, पृष्ठ 179, सअद बिन उस्मान, मकतबा इस्लामिया 2015 ई)

जंग बद्र से पहले इस्लाम स्वीकार किया और सब से पहले जंग बद्र में शरीक होकर बद्री सहाबी की सआदत हासिल की। उसके बाद, जंग उहद में शामिल हो गए। जंग उहद के बाद उनका नाम छुप जाता है, प्रकट नहीं होता, और कोई जानकारी नहीं उनके बारे में, और हज़रत अली के ख़िलाफत के समय में सामने आता है। बड़ा लंबा समय उनके बारे में कोई जानकारी नहीं हैं, फिर अली के ख़िलाफत के समय में पेश आने वाली सभी लड़ाइयों में यह हज़रत अली के साथ शरीक हुए और मृत्यु के साल के बारे में भी सीरत की किताबों में कुछ नहीं मिलता।

(हबीब किबरिया के तीन सौ सहाबा तालिब हाशमी पृष्ठ 221, ख़लीफा बिन अदी, अल-क़मर इन्ट्रप्राईज़ लाहौर 1999 ई)

हज़रत मुआज़ बन माअस की घटना बेयर मऊना में शहादत हुई। उनके पिता का नाम नाअस भी बयान होता है। उनका संबंध ख़ज़रज कबीला ज़रकी से था। कुछ रिवायत के अनुसार आप जंग बद्र और जंग उहद में शरीक थे और बेयर मऊना के मौके पर शहीद हुए। एक रिवायत के अनुसार आप जंग बद्र में घायल हो गए थे और कुछ समय बाद ही चोट के कारण वफात पा गए थे।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 5, पृष्ठ 196, मुआज़ बन मआस, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

आप के साथ आप के भाई आयज़ बिन मआस भी जंग बद्र में शामिल हुए थे।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 3, पृष्ठ 147, आयज़ बिन मआस, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई)

सुलह हुदैबिया के बाद जब उयैन: बिन हसन ने ग़तफान कबीला के साथ जंगल में चरने वाली आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी पर हमला किया और रखवाली पर तैनात एक व्यक्ति को कत्ल कर दिया और ऊंटों को हांक कर ले गया और शहीद होने वाले व्यक्ति की पत्नी भी उठाकर ले गया तब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना मिली तो आप ने आठ सवार दुश्मन की तलाश में भेजे। इन आठ सवारों में हज़रत मुआज़ बन मआस शामिल थे।

इस अवसर पर एक रिवायत यह भी है कि इन आठ सवारों में हज़रत अबू अयाश शामिल थे। भेजने से पहले आप हज़रत अबि्रू अयाश से कहा कि तुम अपना घोड़ा किसी और को दे दो कि जो तुम से अच्छा घोड़ा चलाने वाला हो। अबू अयाश ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल में इन से अच्छा घोड़ा चलाने वाला हूं कहते हैं कि यह कर अभी सिर्फ 50 गज़ की दूरी पर गया था कि घोड़े ने गिरा दिया गया। अबि्रू अयाश कहते हैं कि इस पर बहुत अधिक चिंतित हुआ क्योंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमा रहे थे अगर तुम अपना घोड़ा किसी और को दे दो तो बेहतर है, जबकि मैं कह रहा था कि मैं इन सबसे बेहतर हूँ। फिर बनो ज़रीक के लोगों का विचार है कि उसके बाद आं हज़ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अयाश के घोड़े पर मुआज़ बिन माअस आयज़ बिन माअस को सवार कर दिया।

(तारीख़ अतिब्बरी, जिल्द 3, पृष्ठ 113, 115, जंग ज़ी करद, दारुल फिक्र बैरूत 2002 ई), (सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 486, अध्याय जंग ज़ी करद, मुद्रित दार इब्ने हज़म बैरूत 2009 ई)

हज़रत सअद बिन ज़ैद अश्शहली एक सहाबी था। उन का सम्बन्ध बनू अब्दुल अश्हल से था जंग बदर में शामिल हुए थे। कुछ का विचार है कि बैअत उक्बा में शामिल हुए थे। जंग बद्र, जंग उहद और जंग ख़दक़ समेत सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के हाथ बनू कुरैज़ा की कैदी भेजे थे। आप ने उन के बदले में नजद में घोड़े और हथियार खरीदे थे।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 217 से 218, सअद बिन ज़ैद बिन मालिक, दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई)

रिवायत है कि हज़रत सअद बिन ज़ैद ने एक नजरानी तलवार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तोहफे में दी थी। आप ने वह तलवार मुहम्मद इब्न मुस्लमा को प्रदान की था और कहा था कि इस से अल्लाह तआला के मार्ग में जिहाद करना और जब लोग आपस में मतभेद करने लगें तो इस को पत्थर पर दे मारना घर में घुस जाना।

(असदुल ग़ाब:, जिल्द 2, पृष्ठ 216, सअद बिन ज़ैद अल्अशहली,दारुल फिक्र अन्नशर वत्तौज़ीअ बैरूत 2003 ई)

अर्थात किसी भी प्रकार के उपद्रव में भाग न लेना।

अल्लाह तआला करे कि इन बातों पर अनुकरण करने वाले आज कल वह मुसलमान भी हों जो एक-दूसरे की गर्दन काट रहे हैं और दुनिया में शांति स्थापित हो। अल्लाह तआला उन सहाबा के स्तर ऊंचा करता चला जाए और हमें भी नेकियाँ करने और कुरबानियां करने और ईमानदारी और वफादारी के साथ अपना जीवन बिताने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 3-10 January 2019 Issue No. 1-2

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2 का शेष

कारवां के लिए आरक्षित था। इन तंबूओं और कारवां के चारों ओर तारें लगाई हैं और दरवाज़े भी बनाए गए हैं, और इस क्षेत्र में पंजीकरण, कार्ड की जांच और स्कैनिंग के बाद ही प्रवेश किया जा सकता है।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ निरीक्षण के लिए लज्ना के जलसा गाह की तरफ गए। इस साल पहली बार लजना को भोजन की व्यवस्था और उनके बाज़ार का प्रबंधन बाहरी खुले क्षेत्र में मारकीज़ लगाकर किया गया था जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान हाल्स में उनके जलसा गाह के लिए व्यापक स्थान प्राप्त हो गया। हुज़ूर अनवर ने लज्ना की व्यवस्था का निरीक्षण किया और उन की सारी व्यवस्था देखी और विभिन्न क्षेत्रों की समीक्षा की और निर्देश दिए।

लज्ना की व्यवस्था के निरीक्षण के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला एम. टी. ए स्टूडियो और अन्य संबंधित व्यवस्था का निरीक्षण किया और कुछ मामलों के विषय में पूछा। इसी परिसर में जहां एम. टी. ए स्टूडियो, पुस्तकें स्टोर और बुक स्टालों तथा जलसा सालाना के विभिन्न दफ्तरों के अस्थायी मारकीज़ लगाकर बनाए गए थे, वहां एक बड़ी मार्की लगा कर जहां जलसा में आने वाले मेहमानों के लिए इस को जलसा गाह का हिस्सा बनाया गया था ताकि जिन लोगों को हाल में स्थान न मिल सके वह मार्की में बैठें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर अफसर साहिब जलसा सालाना ने इस मार्की के संदर्भ में विस्तार बताया और कहा कि यहां नियमित टेलीविजन रख दिए गए हैं ताकि वे दोस्तों जो यहां मार्की में हों जलसा की कार्रवाई देख सकें। इस मार्की के आसपास रिक्त ख़ाली स्थान हैं, आवश्यकता पर उन को भी प्रयोग किया जा सकता है।

बाद में, हुज़ूर अनवर इब्न अल-बुखहा अल-अज़ीज़, पैगंबर, ने पुस्तक की दुकान और स्टाल का निरीक्षण किया। यहां, पुस्तकों को विभिन्न लेआउट के साथ रखा गया था और महान लेआउट के साथ स्टालों, ताकि पुस्तकों द्वारा प्राप्त पुस्तकें उनकी वांछित किताबें प्राप्त कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने राष्ट्रीय सचिव प्रकाशन से पूछा कि क्या हज़रत मुस्लेह मौऊद की किताब हस्ती बारी तआला के दस तर्क का जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ है। सचिव ने कहा कि इस पुस्तक का अभी तक अनुवाद नहीं किया गया था। हुज़ूर अनवर ने निर्देश दिया कि इसे प्रकाशित करके इस पुस्तक का अनुवाद करें। इस के बाद हुज़ूर अनवर उस भाग में पधारे जहां विभाग संपत्ति, विभाग निर्माण सौ मस्जिदें, विभाग तारीख़, ग्रीन क्षेत्र के कार्ड जारी करने का विभाग, विभाग शिक्षा, विभाग वसीयत, विभाग रिश्ता नाता, विभाग वक्फे नौ, अहमदिया आर्किटेक्ट्स एंड इंजीनियर एसोसिएशन, ह्योमेन्टी फर्सट, ऑडियो विभाग, वसीयत विभाग के दफतर की स्थापना की गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने विभाग ह्योमेन्टी फर्सट का निरीक्षण किया। अफ्रीका में प्रयोग करने का लिए यहाँ GRAVITY LIGHT का एक नमूना रखा गया था। हुज़ूर अनवर ने इस बारे में पूछा। ह्योमेन्टी फर्सट जर्मन के अध्यक्ष डॉ अतहर ज़ुबैर ने इसे ऑनलाइन कर के दिखाया। यह लाईट किसी चीज़ के साथ लटकाई जाती है। एक तरफ से ज़ंजीर खींचती है और जंजीर के दूसरी तरफ का हिस्सा ऊपर चला जाता है और दौरान 20 मिनट की अवधि तक यह लाईट जलती रहती है। 20 मिनट गुजरने के बाद, जंजीर ख़ीच दें तो फिर जितना समय चाहें लाईट को जारी रखा जा सकता है।

हुज़ूर अनवर ने डॉ साहिब से फरमाया कि प्राचीन काल में हवा देने के लिए इस तरह पंखे बनाए जाते थे दोनों पैर से डोर हिलाकर इस को चलाते थे। अब, जैसा कि आपने यह लाईट बनाई है, इस तरह एक पंख बनाएं ताकि जो इस प्रकार की ऊर्जा के माध्यम से चले।

ह्योमेन्टी फर्सट वालों ने एक आपातकालीन किट तैयार की है जिस में समस्त इस प्रकार के बुनियादी सामान उपलब्ध हैं जिस से एक व्यक्ति दो सप्ताह तक जीवित रह सकता है। इस किट में भोजन की सुविधा, बिस्तर, टॉर्च, छोटा रेडियो, इसी तरह बुनियादी सुविधाएं शामिल हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुहब्बत से रकम अदा कर के एक किट भी ख़रीदी और इसी तरह ह्योमेन्टी फर्सट ने जो सामान तैय्यार किया था उस का एक-एक नमूना भी ख़रीदा।

यहां निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे जहाँ प्रोग्राम के अनुसार जलसा सालाना की डयूटयों का उद्घाटन समारोह था।

सभी नाज़मीन (पर्यवेक्षकों) अपने सहयोगियों और काम करने वालों के साथ एक क्रम से बैठे हुए थे। अफसर जलसा सालाना, अफसर जलसा गाह और अफसर ख़िदमत ख़लक के अलावा नायब अफसरों की संख्या 13 है। नाज़मीन की संख्या 71 हे। नायब नाज़मीन की संख्या 186 है जबकि आयोजकों की संख्या 339 है और सहायकों की संख्या 5856 है। दो सौ अत्फाल इस के अतिरिक्त हैं। इस तरह कुल 6769 पुरुष और महिलाएं और बच्चे अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं।

समारोह का आरम्भ आदरणीय अनीक अहमद की तिलावत कुरआन करीम के आरम्भ से शुरू हुआ, और बाद में इस का उर्दू और जर्मन में अनुवाद प्रस्तुत किया गया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फरमाया:

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad